श्री पण्डित रामगुलामजी द्विवेदी कृत

कवित्त-रामायण

जो

शुद्धता पूर्वक प्राचीन हस्तलिखित और मुद्रित प्रतियों के आधार पर सम्पादित हुई है।

सम्पादक

पण्डित महावीरप्रसाद मालवीय वैद्य "वीर कवि"
ज्ञानपुर, बनारस स्टेट।

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

सम्वत् १९८१ वि०

प्रथम बार] [मूल्य ।≈)

प्रस्तावना।

पण्डित रामगुलामजी द्विवेदी हरिभक्त और महात्मा पुरुष थे। गोस्वामी तुलसीदासजी के काव्य के पूर्ण अनुरागी थे और रामचरितमानस को क्षेपकों के महाजाल से भिन्न कर सर्वप्रथम आप ही ने शुद्ध रूप प्रदान किया था। इनकी जीवनी कहीं लिखी हुई नहीं मिलती, केवल सुनी सुनाई किम्वदन्तियों द्वारा जो कुछ ज्ञात हुआ उसी का उल्लेख किया जाता है।

द्विवेदीजी सम्वत् १९०८ वि० में परलोकगामी हुए हैं, उस समय उनकी अवस्था ७८ वर्ष की थी। इस से जन्म-काल लगभग सम्वत् १८३० के होगा। आपका निवास स्थान मिर्ज़ापुर में था। कहते हैं कि आपको हनूमानजी का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ था। सुना गया है कि पण्डित रामगुलामजी के एक कन्या के सिवा दूसरी कोई सन्तान नहीं थी। आप प्रति-दिन रामचरित-मानस की कथा कहते थे और बड़े बड़े विद्वान रामानुरागी श्रोता निरन्तर श्रवण करने आते थे। श्रीपंदास प्रसिद्ध रामायणी आप ही के शिष्य थे।

गोस्वामी तुलसीदासजी के ग्रन्थ आप के विचार में केवल १२ थे* रामलला-नहछू, वैराग्य-सन्दीपनी, बरवै-रामायण, पार्वती मङ्गल, जानकी-मङ्गल, रामाज्ञा-प्रश्नावली, दोहावली, कवित्त-रामायण, गीतावली, कृष्ण गीतावली, रामचरितमानस और विनय-पत्रिका। द्विवेदीजी के संग्रह के अनुसार पहले

---

*गोस्वामी तुलसीदासजी के बारहों ग्रन्थ 'तुलसी ग्रन्थावली' के नाम से हमारे यहां मोटे अक्षरों में शुद्धता पूर्वक छप रहे हैं। इस पुस्तक के अन्त में उसका विज्ञापन पढ़िये—

काशी में ये बारहों ग्रन्थ छपे थे। इसके सिवा सङ्कटमोचन, प्रबन्धरामायण, कवित्तरामायण, विनयनवपञ्चक और किष्किन्धाकाण्ड ये पाँच ग्रन्थ पण्डित रामगुलामजी के बनाये हुए सुनने में आते हैं।

एक बार रीवाँधिपति महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव विन्ध्याचल भगवती के दर्शनार्थ आये थे। उन्हों ने पण्डित रामगुलामजी को विन्ध्याचल आकर दर्शन देने के लिये दूत द्वारा सन्देसा भेजा। पण्डित जी ने एक पद लिख कर दूत को दिया और स्वयम् नहीं गये।

"बात यह को नहिँ सुनत हँसी। तजि रघुनाथ जो जाचहुँ औरहि, तौ मुख मलौ मसी—इत्यादि"

द्विवेदीजी के भावपूर्ण पद्य को पढ़ कर बुद्धि विचक्षण रीवाँ नरेश उनके घर पर आये और मुक्तकंठ से इस अनन्य उपासना की प्रशंसा की।

इसके सिवा और भी बहुत सी बातें सुनने में आती हैं किन्तु प्रमाणाभाव से उनका उल्लेख नहीं किया गया है।

यह कवित्तरामायण उन्हीं परम भागवत पण्डित रामगुलामजी द्विवेदी की रचना है जिसको हम कठिन शब्दों की टिप्पणी सहित प्रकाशित करते हैं। यदि हिन्दी प्रेमी विद्वान और सुकवियों ने इसका आदर किया तो द्विवेदीजी के अन्य ग्रन्थों को भी खोज कर हम प्रेमी पाठकों के सामने उपस्थित करने का प्रयत्न करेंगे।

सज्जनों का कृपाकांक्षी—

मि० ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्रवार
सम्वत् १९८१ विक्रमाब्द

महावीर प्रसाद मालवीय
"वीर" कवि
ज्ञानपुर—बनारस स्टेट।

कवित्तरामायण की सूची।

श्रीगणेशायनम

श्रीजानकी वल्लभोविजेयतै

श्री पं० रामगुलामजी द्विवेदी कृत

कवित्त रामायण

बालकाण्ड

कबित्त—पौढ़े पटु पालने विलोकि सिसुरूप राम, जननी मुदितवारवार बलि बलिजात। सोहै सुख सदन वदन मसिविन्दु तकि, कीन्हों है मधुप वास मानो आय जलजात ॥ मंजु पद पानि नैन नासिका कपोल कान, चिवुक अधर कंठ उपमा कही न जात। पल्लव कमल मीन कीर आदरस सीप, जम्बू बिम्ब कम्बु औ कपोत देखिके लजात ॥१॥

सवैया—रंग अनेक बन्यौ बर पालन लाल अमोल अनेक लगे हैं। पौढ़े हैं रामलला तेहि ऊपर पेखत पेखनिहार ठगे हैं॥ देव कहैं न लहैं उपमा-हम भूतल भूप के भाग जगे हैं। रामगुलाम तेऊ धनि हैं जग जे हरि के गुन रूप रँगे हैं ॥२॥

पटु=सुन्दर। जलजात=कमल। कपोल=गाल। आदरस=आदर्श, नमूना। जम्बू=जामुन। विम्ब=कुँदुरू। कम्बु=शंख। पेषत=देखते ही।

कवित्त—बालकेलि करत मुकुन्द मधुहारी राम, पेखि पितु मातु महामोद मन में लहैं। कटिसों कछौटी कसी तैसी तरकसी लसी, धरे धनु बान पानि बैन हँसि कै कहैं॥ सेवक सचिव सूर सिसुन्ह बलाइ चले, अमर प्रसन्न अमरारि त्रास को गहैं। वदत गुलामराम लंक में अतंक होत, आगम बखाने ताते विमुख हिये दहैं॥३॥

चारो डिंभ डोलत अवध की डगर जब, देव गन कहैं ऐसे बालक न पेखे हैं। सुने न बचन कान मृदु मुसुक्यानि मेरे, इन्हसों न नेह भयो जन्म केहि लेखे हैं॥ धन्य पितु मातु धन्य नगरनिवासी सब, सुकृत समूह जिन्ह एकवार देखे हैं। वदत गुलामराम नैन अभिराम राम, चतुर चितेरे चाहि रूप अवरेखे हैं॥४॥

बालकन्द वरन विलोकत बनत बपु, विधु सो वदन कोटि मदन लजावनो। इन्दीवर नैन सील सुभग सलोने केस, भृकुटी सुदेस भाल तिलक सुहावनो॥ कटि पटपीत पाय पैजनी मुखर मंजु, रमा को निवास उर दोष दुख

कछौटी=कछनी। लसी = शोभा देती है। अमरारि=राक्षस। अतंक=डर। आगम=शास्त्र। डिम्भ=बालक। चाहि=अपेक्षाकृत अधिक। अवरेखे=उरेहे, लिखे। कन्द=बादर। इन्दीवर=कमल।

दावनो। वदत गुलामराम धरे धनु बान राम, दसरथदेव को दुलारो मनभावनो ॥५॥

जैसे स्याम सुन्दर सलोने नखसिख राम, तैसई भरत वपु सुषमाकी खानिहैं। गोरे गात लखन चखन अति प्यारे लगैं, तैसे रिपुसूदन सकल धनु पानिहैं॥ पीरे पट पीरी पाग पीरियै पन्हैयाँ पग, खेलत कुमार चारौ जग सुख दानि हैं। वदत गुलामराम अवध प्रमोद धाम, करैं सिसुलीला सुचि सुकृती बखानिहैं ॥६॥

खेलत अवध वर वीथिन्ह विलोकि बाल, पुर नरनारि निजकाज को विसारहीं। साँवरे गोरे सरीर करन्ह धनुष तीर, उपमा कहत कविवृन्द हिय हारहीं॥ कीधौं चारि देव किधौं चारि वेद वेषधारी, कीधौं फलचारि चारौ मुक्ति कै विचारहीं। कीधौं चारितत्व चारि व्यूह कै गुलामराम, भूपतिकुमार चारि चारु निरधारहीं ॥७॥

सवैया—एक दिना निजमन्दिर सुन्दर चन्द्रकला सुअटा अवरोही। देखतही रघुनन्दन की छवि भूमि गिरी न रही सुधि मोही॥ जानि सनेह कृपा करि के सब देत भये वरदानहि

व्यूह=निर्माण, रचना। निरधार=निश्चय करना। अवोरही=नीचे आई। मोही मोहित हुई।

ओही । रामगुलाम भये मथुराधिप हैं। करिहैं जसुदा सुनु तोही ॥८॥

कवित्त—भयेहैं निरास निमि नगरनिवासी जब, टर्यौ ना पिनाक महिपाल श्रम कै रहे। ताही समै सहजा सपन मैं दरस पाये, कौसिक के संग राम आये सुख दै रहे॥ सीताजू सों सपदि सुनायो सो प्रसंग सुभ, अकनि सखी के बैन रोम तन ह्वै रहे। कहत गुलामराम फैली वात धाम धाम, जहाँ तहाँ पौर प्रभु पथ को चितै रहे ॥९॥

दाड़िम बदाम दाख नारियर पुंगीफल, लवँग छुहार तरु लगे हैं कतार सों। जामुन जमीर तूत पनस रसाल खिनी, वदरी नरंगी केर नम्र फलभार सों॥ अगर असोक वट पीपल कदम्ब नींम, वकुल कपित्थ बेल पेखत पियार सों। वदत गुलामराम बसत बसन्त सदा, रामहि रमायो बास विसद बिहार सों ॥१०॥

नीके कै निकाई रघुनाथ की निहारी जब, जनकसुता को महामोद न कह्यौ परै। नीरज नयन निसिनाथ मुख बिम्बाधर, कुन्द-

---

पौर=ड्योढ़ी। दाख=मुनक्का। पनस=कटहर। रसाल=आम। वदरी=वेर। केर=केला। वकुल=मौलसिरी। कपित्थ=कैंत। पियार=चिरौंजी।

कलिकावली रदावली हियो हरै ॥ उर मनिमाल कान कुंडल टिपारी सीस, कुन्तल कुटिल भाल तिलक प्रभा करै। साँवरे सरीर पीतपट की चटक चाहि, दामिनी गुलाबराम मन्दिर दुरे डरै ॥११॥

फूल फुलवाई लेन आये दोउ भाई आजु, नाम राम लखन दुलारे दसरथ के। ताड़का सँघारी मख राखी मुनितीय तारी, सुने खल-कुल साल पाल सदपथ के॥ स्याम अवदात गात वयस किसोर ज्ञात, जानियत ये हैं मनमथ मनमथ के। वदत गुलाबराम देखि वाल जाल मोही, सुनत सयाने अजों विकैं विनु गथ के॥१२॥

नूपुर पगनि कटि किंकिनी उरसि हार, वाजूवन्द कंकन कमल कर में कहैं। कंठसिरी कंठ कान विरिया विराजै नाक, वेसर सुहाई लोनी लाये कहूँ एक हैं॥ लसत ललाट टीको सीसफूल सीस नीको, चूरी चारु मुद्रिका बनाये सब वे कहैं। वदत गुलाबराम गौरि पूजिबे को आई, ऐसी ऐसी सखी सीय संग में अनेक हैं॥१३॥

देखि राम रूप सिय सखिन समेत मोही,

टिपारी=एक प्रकार की टोपी। अवदात=गोर। मनमथ=मन्मथ,कामदेव। वालजाल=स्त्रीसमूह। गथ=मोल। कंठसिरी=गले की शोभा, एक आभूषण। सीसफूल=शिर का गहना।

समुझि पिता को पन मन दुख भयो है। कहाँ कर कोमल कमल रघुनन्दजू के, कहाँ धनु कुलिस कठोर निरमयो है॥ धीरज न होत कयों हूँ बिकल विदेहसुता, विरह सकोच सोच ताप तनतयो है। वदत गुलाबराम जानत सुजान राम, जानकी सनेहरंग चितपट रयो है॥१४॥

आये राम लखन सुनत नरनारि धाये, जनक नगर वर भारी भीर भई है पेखनो सो पेखनो चले हैं धाम काम तजि, एकै जिन्ह देखे ते कहत वैस नई है॥ एकै कहैं ताड़का सुबाहु रन इन्हें मारे, एकै कहैं गौतमतिया को गति दई है। वदत गुलाबराम कौसिक को राखे मख, ताते पुर बड़ी बात सबै ब्यापि गई है॥१५॥

बड़े बड़े नैन मैन मोहत अनेक आली, साँवरो कुंवर बड़ो सुन्दर सुजान री। बड़े बड़े मोतिन्ह के कुंडल कलित कान, बड़े बड़े बाहुन बिराजै धनु बान री॥ बड़े बड़े वीर सुभुजादिक समर मारे, कौसिक प्रवीन बड़े मानत महान री। अवसि गुलाबराम तोरैंगे महेस चाप, जनक जुड़ाने आजु जानत जहान री॥१६॥

कुलिस=वज्र। निरमयो=बनायो। रयो=रङ्गो। पेखनो=तमाशा। कलित शोभायमान।

राम सुख सुन्दर सरद ससिहू ते सुठि, लोचन चकोर करि सखि विरमाउ री। नैन मैन सुधा सरवर के सरोज भव्य, सुखमा मरन्द मन मधुपै पिश्राउ री॥ बदत गुलामराम लाज को न काज आज, बड़े पुन्य पुंजतें बन्यौ है यौं बनाउ री। धन्य हैं जनक औ सुनैना धन्य धन्य सीता, धन्य हम धन्य पुर धारे राम पाउ री॥१७॥

भूपन्ह निहारे वरवीर असुरन्ह काल, विदुष विराट नारि रूपवंत मार हैं। जनक कुटुम्बिन को सजन सगे से लागे, जोगिन्ह परम-तत्व रानिन्ह को वार हैं॥ भक्तन को इष्ट देव विमुख कलेसप्रद, निरख विदेहसुता सब सुखसार हैं। भाव अनुरूप देखिपरत गुलामराम, रंगभूमि आये दसरथ के कुमार हैं॥१८॥

जलद तमाल कुन्द कनक वरन दोऊ, वयस किसोर पीत आभरन्ह धारे हैं॥ कटिन्ह तूनीर पानि सोहत धनुष वान, उर मनिमाल भाल तिलक सँवारे हैं। विस्वामित्र साथ माथ चौतनी हरत मन, राजत रुचिर मंच रूप उँजि-

---

सुठि=अत्यन्त। विरमाउ=लोभाउ। भव्य=सुन्दर। सुखमा=सौंदर्य्य। मरन्द=पुष्परस। विदुष=पण्डित। वार=बालक। आभरन=गहना। तूनीर=तरकस। चौतनी=बालकों के पहिरने की एक प्रकार की टोपी।

यारे हैं। देखि राम लखन गुलामराम नरनारि, अंग अंग ऊपर अनंग कोटि वारे हैं ॥१९॥

सवैया—हेमलता पर पूरनचन्द लखे रघुनन्द महासुख पायो। सोनसरोज से लाल पराग लै सादर सीय के सीस चढ़ायो॥ दुन्दुभि देव बजावत गावत देववधू नभ आनन्द छायो। रामगुलाम भयो जग मंगल मंगलरूप ससक्ति सुहायो ॥२०॥

अयोध्या काण्ड

कवित्त—सीस जटामुकुट मयंकहू तें नीके मुख, गोरे साँवरे शरीर पथिक सुहाये हैं। कर सर चाप कटि कलित निषंग कसे, मुनिपट धारी अंग अंग छवि छाये हैं॥ अम्बक अरुन जानु लम्बित विसाल बाहु, बल के उदधि बड़े भाग वन आये हैं। भूपति कुमार कोऊ सील के अगार दोऊ, देखन गुलामराम नारिनर धाये हैं ॥२१॥

सुठि सुकुमार हैं कुमार काहू भूपति के, कोमल कमल अंगअंग अति नीके हैं। खंजन बिलोचन विलोकत बिमोहैं मन, गति को गयन्द कहा पायनदरी के हैं॥ मेरे जान मदन

हेमलता = सोने की वेलि। सोन = पीला, लाल। जानु = घुटना। पायनदरी = पायनदाज पैर पोछने का कपड़ा।

वसंत मुनि वेष किये, इन्हैं लखि अस्विनीकुमार लगे फीके हैं। रूपसुधा सागर उजागर अमोल नग, प्रगट गुलामराम मंडन मही के हैं ॥२२॥

सॉंवरे गोरे के बीच नारि सुकुमारि सोहै, सुखमा सकेलि बिधि विरची बनाइ कै। रम्भा रती संज्ञा सची रोहिनी भवानी रमा, उपमा विचारे कवि रहते लजाइ कै॥ जोग सिद्धि जोगिन्ह की संपति दिगीसन्ह की, ईसन्ह की ईसता एही ते कही गाइ कैं। याही के विलास के विकास विलसत विश्व, वापुरो गुलामराम कहै क्यों बुझाइ कै ॥२३॥

कानन कथा के सुनै जबै तबै सीस धुनैं, हेरैं नरनारि ते लखन रामजानकी। दैवहि लगाइ दोष बचन कहैं सरोष, कैकई कठोर हाय कुलिस पषान की॥ बालक पठाये ऐसे जियैगो नरेस कैसे, पुर परिवार के न ह्वैहै सुधि प्रान की। बदत गुलामराम जौपै वनवास राम, विधि बलवान तौ बसाइ कहा आन की ॥२४॥

सखी गोरे सॉंवरे सिधाये एहि पंथ जे वे, तैसे तेई कहा कहौं प्रानन के मीत री। सिर जटजूटधारी कटिन्ह निषंगधारी, कर सर चाप

संज्ञा=सूर्य्य की पत्नी। रोहिनी =चन्द्रमा की स्त्री।

धारी धारी पटपीत री ॥ देस के न गाँउँ के न ठाँउँ नाउँ जानैं येपै, भूलैं ना भुलाये होत मीठो कहुँ तीत री । बदत गुलामराम भावै ना भवन काम, फेरि ना फिरे हैं दोऊ पथिक पुनीत री ॥२५॥

मिले बालमीक वन पूरवकथा को कही, जन्म भृगुवंश मेरो कर्म कोल के किये । सप्तरिषि भेंट भई दया करि सीख दई, मरामरा जपे द्विज सुद्ध होइगो हिये ॥ नाम के प्रताप पाप सकल सिराने राम, महामुनि पद पायो जागि जग हूँ जिये । रावरे निवास जोग चित्रकूट वास सदा, मुदित गुलामराम मानि प्रभु हैं लिये ॥२६॥

चारु चित्रकूट धाम सानुज बसे हैं राम, सरित समीप करि परनकुटीर को । सफल सफूल बेलि विटप विचित्र वन, रहत वसन्त सदा सुखद सरीर को ॥ झरना झरत वारि त्रिविध बहै बयारि, बोलत बिहंग मृग लेत हरि पीर को । वदत गुलामराम नाना मुनि को बिराम, सुजस सुनाइ ते रमावैं रघुबीर को ॥२७॥

व्याकुल सुमंत्र पथ रथ के चलैं न घोरे, वन-मृग जोरे आनि मानो बरजोरी सों । बारबार

परन कुटीर=पत्तों की कुटी ।

हेरैं दिसि दिसिन दरद भरे, गरे जिमि ओरे गात ताप नहिँ थोरी सोँ ॥ लोचन स्रवत नीर निपट अधीर भये, भेंटते कृपाल को बँधे न होते डोरी सोँ ॥ बदत गुलामराम सुने रघुनाथ नाम, पावन विराम वानी सुधारस बोरी सोँ ॥२८॥

सोचत सचिव चित भूप सोँ कहोंगो कहा, सीताराम लखन पठायो पुर आयो हैाँ । सुनत सँदेस तन तजैगो नरेस आसु, सुजन कलेसदानि वृथा जग जायो हैाँ ॥ कैासिला सुमित्रा पुरवासी दासी दास सब, होहिँगे बिकल देखि खाली रथ ल्यायो हैाँ । बदत गुलामराम समुझि कियो न काम, साथ रघुनाथ के न कानन सिधायो हैाँ ॥२९॥

संध्या समै सचिव प्रवेस को कियो है पुर, राखि रथ द्वारे पैठो भवन भुआल के । देखत सुमंत्र को लियो है उर लाइ नृप, बूझे समाचार बारबारही दयाल के ॥ सुत बनवास सुनि अति अकुलाने तब, दुनीपति दीन मीन मानो सूखे ताल के । बदत गुलामराम रामराम रामराम, रामराम भाषि गयो लोक लोकपाल के ॥३०॥

भयो महा सोक सब पुर परिवार दुखी, रानी

हेरैं=देखें, जोहैं । कलेसदानि=दुखदाई । कानन=जंगल । दुनीपति=राजा ।

अकुलानी धुनै सीस बारबारहीं । विपुल विहंग वन पर्‌यौ पवि जोर करि, धीरज न होत केहू बिकल पुकारहीं ॥ नृपहि सराहैं कैकई को वाकवहि दाहैं, निसि न सिरात कोऊ वपु न सँभारहीं । बदत गुलामराम भोर गुर आयो धाम, वोहित विवेक सोकसिंधु ते उबारहीं ॥३१॥

आये सुनि भरत ससेन सोच राम उर, लखन सरोष वैन कहे रघुनाथ सों । कैकई सुवन सत्रुसमन समेत दल, दलौं पल माहिँ जैां न धरौं धनु हाथ सों ॥ अकनि प्रतिज्ञा लोक लोकप सकाने सब, भई नभबानी योँ कहत वर भाय सों । बदत गुलामराम सहसा न कीजे काम, ब्राह्मनी नकुल कथा बूझि नीति गाथ सों ॥३२॥

होवै वरु अचल चलाँक भू छमा को तजै, अभ्र में अकास मिलै गिलै तम चंडकर । तजै मरजाद सिंधु गोपद अगस्त्य बूडैं, मेरु को मसक लेहु फूलै कंज सिला पर ॥ ससक विखान हिमवान कालकूटश्रवै, सिकता सनेह वंध्या पूतहूँ

पवि=वज्र। वोहित=जहाज। अकनि=सुनकर। लोकप=लोकपाल। सहसा=जल्दी। अचल=पर्वत। भू=धरती। अभ्र=मेघ। गिलै=निगल ले। चंडकर=सूर्य्य। ससक=खरगोस। विखान=विषाण, सींग। सिकता=बालू। सनेह=चिकनाई युक्त।

विवाद कर। वदत गुलामराम बंधुसें कहत राम, राजमद भरतै न होइ पद पाय हर ॥३३॥

स्यामल सरीर नीलनीरद मयंकमुख, जटिल विसाल वाहु वेदी पै विराजमान। वाम-भाग भ्राजति विदेहसुता मोदजुत, सोहत सुमित्रानन्द आगे धरे धनुबान ॥ वारिज विलोचन विलोकनि विमोहैं मन, भरत प्रनाम कीन्हें देखि यों कृपानिधान । पाहि रामचन्द्र पाहि रामभद्र रामपाहि, उठे रघुनाथजू गुलामराम सुनि कान ॥३४॥

छप्पय—तुम मम गुर पितु मातु बंधु हित सखा सनेही । साहिब समरथ सरनपाल अनुकूल न केही ॥ कोक सोकहर सूर मुदिरगति चतुर चातकहि । मीन नीर आधीन कुमुद विकसत मयंक लहि ॥ जग जिमि न जियत मनि विनु फनिक, तिमि दासहि आसा आप की। करजोरि भरत हरि सों कहत, कीजै छमा प्रलाप की ॥३५॥

कवित्त—जननी समान जिन्ह जानी है पराई नारि, पर अपवाद पर वित्त सो न रति है।

नीरद=मेघ । मुदिर=मेघ । मयंक=चन्द्रमा। प्रलाप=व्यर्थ की बकवाद । अपवाद=निन्दा । वित्त=धन । रति=प्रीति ।

सत्य प्रियभाषी साधुसंग अभिलाषी सदा, विप्र-
पद प्रीति नीचसंगति विरति है ॥ संपति विपति
मध्य एकरस रहै सुधी, सबही सुखद हरिहर
की भगति है । बदत गुलामराम भरत प्रबोधे
राम, लोक में सुजस परलोकहू सुगति है ॥३६॥

दीन पर दया औ समान सन मैत्री करै,
गुरजन देखिकै बिसेखि सुख पावहीं । खल तें उदा-
सभाव वर्त्तमान वर्त्तैं सदा, भावी भूत भव्य को
न सोच उर ल्यावहीं ॥ देव द्विज भक्ति वेद विद्या
को विवेक जिन्हैं, मान मद हीन ह्वै गोविन्द
गुन गावहीं । वदत गुलामराम भरत प्रबोधे राम,
ऐसे साधु सज्जन सुजान मोहि भावहीं ॥३७॥

अरण्ड काण्ड

कवित्त—मन्दाकिनि तीर रम्य सीतल
समीर वहै, विटप विशाल बेलि कलित वितान
हैं। केकी कीर कोकिल कपोत कलहंस कूजैं, चातक
चकोर चक्क सुख के निधान हैं ॥ कदली कदम्ब
आम चमर विचित्र मृग, भालु कपि कोल करि
डोलत महान हैं । वदत गुलामराम बसत सदैव
राम, चारु चित्रकूट चाहि मोहैं गीरवान हैं ॥३८॥

सुधी=बुद्धि,विद्वान् । कलित=सुन्दर । वितान=मण्डप ।
केकी=मुरैला । चक्क=चकवा । गीरवान=गीर्वाण, देवता ।

सुन्दर सुमन बीनि भूषन बनाइ पानि, कोसल किसोर सज्यौ जनककिसोरी को। धाय को तिलक करि पुलक प्रमोद भरि, लाल बलि-जात बारबार लखि गोरी को॥ फटिकसिला विसाल दंपति विराजमान, प्रेमपान सुधा की पियास दुहुँ ओरी को। वदत गुलामराम लोनी सी सलोने राम, कोटि रति मार वारिडारौं जोहि जोरी को॥३९॥

आये प्रभु सुनत सुतीछन सपदि धाये, रही ना सरीर सुधि प्रेमसिंधु परिगे। नृत्य को करत गुन गावत प्रमोद भरे, रामरंग राँचे साँचे पंथहू बिसरिगे॥ देखि दसा तिन्हकी मिले हैं रघुनाथ तब, भक्ति बरदान भयो माया महा तरिगे। वदत गुलामराम लहे हैं ललाम स्याम, दोष दुख दारिद प्रयास बिनु टरिगे॥४०॥

कोऊ कहैं ब्रह्म कोऊ पुरुष पुरान कहैं, कोऊ कहैं कर्म काहू धर्म कै बखान्यौ है। कोऊ कहैं काल कोऊ कहत सुभाय बुध, एकहू अनेक कहै जैसो जेहि जान्यौ है॥ जोहौ सोहौ राम तुम्हैं वेदहू न जानि सकैं, रावरे प्रसाद को भरोस

धाय=धवपुष्प। लाल=मानिक। सी=सीता। सलोने=सुन्दर।

उर आन्यौ है। बदत गुलामराम दासरथी दया-
धाम, प्रभु सों सनेह जुरै ऐसो अन मान्यौ है ॥४१॥

जाके वामभाग में बिराजै मिथिलेससुता,
सहित सनेह सदा छबि की छटा छई। दाहिने
रहत जाके लखन अनूप रूप, नखसिख नीके हेम
उपमा न हैाँ दई॥ जाके अंग अंग पै अनंग
कोटि वारियत, धरे धनुबान पानि विश्व
विजई नई। बदत गुलामराम दया करि दीजै
राम, मेरे मन बसै सोई मूरति कृपामई ॥४२॥

घटज कहे तें पंचवटी को पधारे राम,
गीधराज भेंट भई प्रीतिरीति कसे हैं। गौतमी
निहारि कै मुरारि को रम्यौ है मन, अमल कमल
फूले हंसकुल लसे हैं॥ लखन स्वकर सुचि रची
है विचित्र कुटी, परसि पुनीत पाप दोष दुख
नसे हैं। बदत गुलामराम त्यागि कलधौत धाम,
भक्तन के काज रघुराज वन बसे हैं ॥४३॥

जैसे मृगराज गजराज को विलोकि झुण्ड,
झपटि दपटि सींजि मारत महाबली। जैसे वैन-
तेय ब्यालजाल को बिदारै बल, विष्नुज्यौं
विमर्द्दि मध्य हनैं असुरावली॥ लावक अनेक ज्यौं

हेम=सुवर्ण। घटज=अगस्त्यमुनि। गौतमी=गोदावरी
नदी। मुरारि=रामचन्द्र। कलधौत=सोना।

निपातै पक्षिराज बाज, पावक प्रबल जारै तोम तरु की थली। बदत गुलामराम खररिपु राजा-राम, तैसही प्रयास बिनु कौनप चमू दली ॥४४॥

ताड़का सँघारी जिन्ह जारयौ है सुबाहु भट, बिनु फर बान मोहि सागर उतारयौ है। खंडि हरचाप भृगुनाथ को हरयौ है दाप, प्रबल बिराध को प्रयास बिनु मारयो है। दूषन त्रिसिर खर बधे हैं कहत आपु, बदत मरीच तिन्हैं मनुज बिचारयौ है। मोह की बड़ाई बेद गाई है गुल-मराम,मूरख न मानै समुझाय हिय हारयौ है ॥४५॥

पाये पालिबे के जोग मारे मृग छाला भली, कहति बिदेहलली हरि सो निहोरि कै। ऐसो तौ न देखी है कुरंग बहु पेषे वन, आनिये कृपा-निधान जतन करोरि कै॥ प्रिया रुचि जानि कटि कलित निषंग कस्यौ, चले रघुनाथ हाथ चाप सर जोरि कै। बदत गुलामराम सेवक सुखद स्याम, रूप अभिराम महा लियो चित चोरि कै ॥४६॥

माथे जटजूट कटि कसि कै निषंग बाँधे, साधे पानि पंकज प्रचंड धनुसर को। प्रिया

तोम=घना, समूह। कौनप=राक्षस। चमू=सेना। अभिराम=आनन्द दायक।

प्रीति प्रेरित चले कृपाल शीघ्र चाल, आवत असुर भाग्यो देखि रघुबर को। पावत न ध्यान संभु गावत निगम नेति, ध्यावत असेष सेष सदा ब्रह्मपर को। बदत गुलामराम आगे मृग पाछे राम, विबुध विलोकि कै बखानै रातिचर को ॥४७॥

कनक कुरंग संग साजि कै सरासन को, जैसी बिधि बानक चले हैं राम धाइ कै। कोमल कमल पग परनि सुरनि दृग, हेरनि अहेरी वर बसी उर आइ कै॥ लंक की लफनि औ छपनि उझकनि नीकी, ठमक ठगनि ठौनि कैसे कहौं गाइ कै। वन वीथिका में बीर बारक बिलोक्यो जेहि, जानै सो गुलामराम गूँग गुर खाइकै ॥४८॥

अरुनकुमार अति सोच को करत उर, रावन हरत हठि राखी मैं न जानकी। रघुकुल-नाथ को न खबरि सुनाई हाय, वयस बिताई अब होत हानि प्रान की॥ आनँद के कन्द राम-चन्द आये ताही छिन, कही सीय कथा खग आपने पयान की। बदत गुलामराम दियो निजधाम राम विदित बड़ाई वेद करुनानिधान की ॥४९॥

लंक=कमर। लफनि=लचकनि। ठमक=चलते चलते रुक जाना। वीथिका=गली। अरुनकुमार=जटायु, गिद्ध।

निज करकंज सों कृपाल गीधदाह किये, पारे पिंड वैदिकविधान दै जलांजली। सहित सनेह पच्छी वृन्द को जेंवाए बन, बंधु सों कहत बड़ो वाम विधि है बली॥ द्वादस सहस पंच बरष जटायू वृद्ध, आसु विनु देह भयो गतिहू लही भली। तदपि गुलामराम सोचत हिये में राम, मोसों तो न एकौ बनिआई बानि कोमली ॥५०॥

सवैया—श्रीरघुनन्दन की मृदुसूरति बारहिबार विलोकि रही है। द्वौ कर जोरि करी बिनती बर विप्र मतंग कथा जु कही है॥ दीनदयाल दयानिधि केसव दारिद दोष दुरास दही है। रामगुलाम तरी सबरी तव कीरति तासु पवित्र मही है ॥५१॥

मातु समान कृपा तेहि की करि सानुज राम विलोकत भे सर। कै जल मज्जन पान सुखी मन सीतल छाँह रमे तरु के तर॥ नारद आइ गहे पदपंकज भूरि प्रसन्न मिले करुनाकर। रामगुलाम कपीस समागम, चाहत हैं तेहि काल कुजावर ॥५२॥

तीछनता असि की चपला गति सी कटुता

कुजावर=सीतानाथ।

विष की सिगरी है। दाहकता पुनि पावक की अरु काल करालहु ताहि वरी है॥ निष्ठुरता पवि की अहि की मति सागर की गहिराइ हरी है। रामगुलाम कहैं करुनाकर नारद नारि विरंचि करी है ॥५३॥

कवित्त—तीरथ अटन अरु पठन पुरान वेद, सहित विधान नाना कर्मनि को करिबो। भूमिदान हेमदान धेनुदान विद्यादान, गजहू को दान अभिमान परिहरिबो॥ सम दम दया जेते धरम बखानै बुध, तहूँ चवरासी लच्छ जोनि जन्म धरिबो। वदत गुलामराम मुनिहिँ प्रबोधे राम, बिना सतसंग भवसिंधु तेँ न तरिबो ॥५४॥

श्रद्धा साधुसंगम भजन अनरथ हानि, निष्ठा रुचि समासक्ति भाव प्रेम क्रम है। सुनै श्रुति सुजस बखानै मुख जपै नाम, सेवै पदपद्म पूजै प्रतिमा न भ्रम है। बंदन औ दास सख्य आतम निवेदन लौं, लच्छन गहे हैं भक्तियोग मैं न श्रम है। वदत गुलामराम मुनिहि प्रबोधे राम, ऐसो ब्रत जाको ताको करै कहा जम है ॥५५॥

निष्ठा=चित्त का जमना। रुचि=अभिलाषा। समासक्ति=अत्यन्तबल। भाव=मानस विकार।

सवैया—श्रीरघुनायक पायक को मुनि भक्ति विसारद नारद जाँची। सुन्दर स्याम सरूप बस्यौ मन भक्त भले भव कीरति माँची। कै करुनानिधि को बहु बन्दन वीन बजाइ चले मुनि नाँची। रामगुलाम बड़ो भजनानँद धन्य सदा जिन्ह की मति राँची ॥५६॥

किष्किन्धा काण्ड

कवित्त—पंपासर निकट विटप फूले पेखि राम, धीर ना धरत कहैं केते काम बान हैं। ललित लतान के वितान तने जहाँ तहाँ, नटत मयूर खग रहे करि गान हैं॥ सीतल सुगंध मन्द मारुत बसंत पाइ, रतिराज राजै गिरिराज के समान हैं। कहा नरराज नागराज देवराज दीन, देखत गुलामराम त्यागैं मुनि ध्यान हैं ॥५७॥

पच्छिनी समेत पच्छी जच्छिनी समेत जच्छ, मृगिन्ह समेत मृगा विपिन विलोकिये। करिनी समेत करि मोरहू मयूरी संग, भृंग भृंगी संग औ समेत कोक कोकिये॥ विटप विसाल वेलि माल अंकमाल जुत, ऐसे समै कैसे कहौं

पायक=सेवक। विसारद=श्रेष्ठ।

कामवेग रोकिये। वदत गुलामराम जानकी विहीन राम, व्याकुल विहाल होत केहू ना विसोकिये ॥५८॥

बड़े बड़े वाहुन विसाल धनुबान धरे, उन्नत सुकंध गोरे साँवरे सरीर हैं। सीसन्ह सँवारे जटाजूट मुनिपट धारे, बल के निधान महा-वीर धुरधीर हैं॥ विपिन विलोकन विहारत विहंग मृग, सोभा के समुद्र दुइ देखे सरि तीर हैं। अतिसै सकाने विनुजाने ते गुलामराम, सहमि सुकंठ भये निपट अधीर हैं ॥५९॥

आय हनुमान दोउ बंधु को बखान किये, बढ़ी प्रीतिरीति राम रामानुज जानिकै। तुरत मिलाय कपिनाथ सों कही है कथा, भूमिजा के भूषन देखाये तब आनि कै॥ बूझे तें सुनायो वनवास हेतु बालि वैर, दीन्ही अभैबाँह प्रभु सखा सनमानि कै। वदत गुलामराम दीन दुख हारी राम, सूरज सुवन मन रहे सुख मानि कै ॥६०॥

जबै रघुवीर अस्थि चाले सप्त भेदे ताल, तरनि तनै को बालि वध की प्रतीति भै। भागे भ्रम भूरि स्रम दूरि अघ ओघ गये, दीनता दरिद्र दुरे समीचीन रीति भै॥ मिटी चित चिंता सोक

सूरजसुवन=सुग्रीव। समीचीन=अच्छी, सात्विक दस्तूर।

शूल निरसूल भये, संक सकुचानी भीति बीती अति भीति भै। पुलक प्रफुल्ल गात गहे पाय पंकजात, वदत गुलामराम मोहदल जीति भै ॥६१॥

जैसे चन्द चाहि सदा सीतल चकोर चाहै, व्यापत न ताप तन पावकहूँ खाय कै। दिये मनि ओर दृष्टि विहरै भुजंग जिमि, हारिल कड़ेहूँ खसै लकरीन पाय कै॥ राखि सुधि गागरी ज्यौं नागरी चलत पंथ, नटहू कला ज्यौं खेलै अंगन्ह बचाय कै। तैसेही गुलामराम करम कलाप कीजै, सुनहु सुकंठ मन मेरे विषै लाय कै ॥६२॥

वारुनी दिसा मैं वरु उदित दिनेस होहिं, मेरु सकु चरै करै छपाकर ताप को। वह्नि होइ सीतल महीतल छमाको तजै, सिला कंज फूलैं देव त्यागैं तरुनाप को॥ सस सीस सृंग जामै रतिहू न भावै काम, मीन विनु नीर जीवै पालै गंग पाप को। वदत गुलामराम सखा सों बखानैं राम, वृथा न बचन मेरो मान न प्रलाप को ॥६३॥

कानन में अंगद सुनी है राजसेवक सों, कोसल महीप सुत कथा वन आये की। श्रीपति

कलाप=समूह। वारुनीदिसा=पश्चिम। सकु=वरु। चरै=चलै। छपाकर=चन्द्रमा। वह्नि=अग्नि। तरुनाप= तरुणाई। सस=खरगोश।

सुकंठ को मिलाप जेहि भाँति भयो, दीन्ही अभैबाँह राम लाज अपनाये की ॥ बालि बध की प्रतिज्ञा ऋकनि विषाद महा, मातु को जनाइ बात नाय अपनाये की। वदत गुलामराम दुखी कपिनाह वाम, कैसे कै बखानौ व्यथा समाचार पाये की ॥६४॥

हौं तो वीर वाली सप्तदीप वानराली पति, कैसे कै सुकंठ प्रति दीनता सुनावों री। राम के विभेद नाहीं एकरस विस्व माहीं, भेंट के किये तें दससीस गहि ल्यावों री ॥ कौन हीन ग्रीव के मिले तें लाभ लेस उन्हैं, वदत गुलामराम बात समुझावों री। जौपै मोहि मारिहैं खरारि ह्वै गुहारि ताकी, त्यागि प्लवगेस अमरेस-पद पावों री ॥६५॥

सुनत सुकंठ गर्ज तर्जि कै चलो है वाली, भिरे बलवान दोऊ दोऊ रोष हैं भरे। वपुष विसाल दोऊ वीर महा महा माल, दोऊ करैं जुद्ध ख्याल दोऊ ऐंड़ सों अरे ॥ देख्यो तब रामचन्द्र भानुनन्द भयो मन्द, काल तें कराल धनुवान कर में धरे। देवराजसूनु उर विसिष

कपिनाह=बाली। वाम=स्त्री। प्लवगेस=वानरेश। देवराजसूनु=बाली। विसिष=बाण।

निसित मारयो, छल कै गुलामराम दास दुख को हरे ॥६६॥

तीनि गुन पंचतत्व सप्तधातु प्रान दस, प्रकृति पचीस राम कथा विस्तारी है। चौदहो करन चौद गोचर विबुध चौद, वरनि अवस्था त्रय देह निरधारी है॥ कहे हैं विकार षट उर्मी-षट सत्रुषट, सबतें गुलामराम जीव गति न्यारी है। वालि के वियोग सिंधु व्याकुल विलोकि तारा, वोहित विवेक दै उधारी धनुधारी है॥६७॥

जानि रितु पावस प्रवर्षन निवास कियो, चहूँ ओर घेर सों घमंड घन कै रहे। तैसी तरु-राजी मृगराजी अंडजात राजी, सोदर समेत सोभा संपति चितै रहे॥ दामिनि कलाप दुति उड़त वलाक व्योम, डोलत समीर सीर तापन रितै रहे। वदत गुलामराम मैथिली वियोग राम, सुख के समाज सबै राग विगतै रहे ॥६८॥

देवराज निडर निसंघ पै दबाइ चढ़यौ, सुभट वलाहक विसाल विकराल हैं। इन्द्रचाप उदित उदार दामिनी दमंक, दसहूँ दिसान चलिरहीं करवाल हैं॥ दादुर नकीब वन्दी मोर

निसित=तेज, चोखा। वोहित जहाज। सोदर=भाई। सीर=शीतल। रितै=खाली। करवाल=तलवार।

करैं सोर घोर, पाटल पपीहा पाठ पढ़त रसाल हैं। वदत गुलामराम वंधु सों वखानैं राम, पावस प्रसन्न देखो सुख के सुकाल हैं ॥६९॥

छप्पय—एक दिसा सतसहस अयुत अरु लच्छ नियुत पुनि। कोटिक अर्वुद वृन्द खर्व निखर्व भाषत मुनि॥ संख सरोज समुद्र मध्य परार्द्ध लगि संख्या। दसगुन उत्तर अंक सप्तदस अग्र असंख्या॥ रन रामगुलाम कपिन्द दल, अति असंख्य के कहि सकै। वल विक्रम विद्या बुद्धि निधि, सकल समुझि विधि मति थकै ॥७०॥

कवित—जहाँ तहाँ वानर निहारि रहे राम रुख, मालहू विसाल महामाल जोर जंग के। द्विविद मयंद गंधमादन गवाक्ष गज, सरभ सुषेन तार वीरवर अंग के। पाटल पनस जांबवान हनुमान धूम्र, नील नल केसरी प्रचंड रंगरंग के। दधिमुख, विन्द वालिनन्दन गनै के आदि, सकल गुलामराम सत्रुमद भंग के ॥७१॥

ढाहि देहुँ दिग्गज ढहाइ देहुँ हेमाँचल, पुहुमी दवाइ देहुँ लात के अघात तें। सोखि लेहुँ सागर अकास सव रोकि लेहुँ, जातुधान धारि मींजि मारौं वज्रगात तें॥ पंक में मिलाइ

पाटल=गुलाब।

लक रंचक करौं न संक, जानकी छुड़ाइ लेहुँ रावन के हात तें । सुनिकै गुलामराम महति प्रतिज्ञा राम, हेरि हँसि कह्यौ काज कुजा कुसलात तें ॥७२॥

जबै त्रिपुरारि तीनपुर को विनास कियो, भंजत भयो है मय महा भय पाइ कै । विवर बनाय इहाँ असुर रह्यौ है आय, पवि सों प्रहारयो पाकसासन रिसाइ कै ॥ हेमा को दियो है धन धाम यह रीझि हर, देवलोक गई सोऊ समय विताइ कै । ताही की सखी हौं स्वयंप्रभा अस नाम मेरो, देखि हौं गुलामराम रामपद जाइ कै ॥७३॥

सुन्दर काण्ड

कवित्त—जांबवान सीख सुनि बाढ़ो हनुमान वपु, ठाढ़ो भो महेन्द्र देव देखि कै सुचैन हैं । भानु के समान वर वदन विराजमान, भोगी भोग वाहुदंड पिंगायत नैन हैं ॥ वालधी विसाल फेरै हेरै वीर लंक ओर, काल तें कराल अंग

कुजा=जानकी । पाकसासन=इन्द्र । भोगीभोग=सर्प । पिंग=पीला । वालधी=पूंछ ।

अंग बल सेन हैं ॥ सीतापति सुमिरि नदीस कूद्यौ कीसईस, वदत गुलामराम मोद भरे बैन हैं ॥७४॥

जैसे रघुनाथ को अमोघ बान वेगवान, तैसही निसंक लंक बंक गढ़ जाइ हौं। तहाँ जौं न मिली सीता सोधि देवलोक ओक, आइकै अवनि दससीस गहि ल्याइहौं ॥ सोच को न करौ धरौ धीर कपिवीर सबै, मेरे मन मोद महा सीय सुधि पाइहौं। वदत गुलामराम सिद्धि के करैया राम, बली हनुमान को सुजस हौं हूँ गाइहौं ॥७५॥

जैसे चक्रवाकी चक्रवाक हीन दीन महा, नलिनी मलीन निसि भानु बिनु पेखी है। सार-सकिसोरी सोचै नाह के वियोग जिमि, विगत चकोरहू चकोरी जिमि लेखी है ॥ विना देवराज ज्यौं पुलोमजा विषाद करै, रतिहू मनोज गत दुखित विसेखी है। तैसही गुलामराम कोसलनरेस बिनु, मारुतकुमार निमिराजसुता देखीहै ॥७६॥

सानुज सुकंठ सख्य करिकै कृपाल राम, अस्थि चाल ताल भेदे बालि वध को कियो।

नदीस=समुद्र । नलिनी=कमलिनी । पुलोमजा=इन्द्राणी।

जेते भूमि वानर विसाल विकराल वीर, सब को कपिन्द पद भानुनन्द को दियो॥ जानकी के सोध आये अंगदादि जूथनाथ, बातजात हनूमान हैाँ पयोधि लंघियो। राम राजरानी को निहारि कै गुलामराम, भूरिभाग भागी ह्वै जनम लाभ को लियो ॥७७॥

रामचन्द्र कथा कहि कीस मुद्रिका को दई, नाथ नाम अंकित विलोकि लई जानकी। लोचन सनीर गात पुलक प्रमोद उर, सूरति मिली है मनो करुनानिधान की॥ वारवार सीस सों लगाइ बूझी कुसलात, बोली तब वानी महा सुँदरी महान की। कोसलेस सानुज कुसल मिथिलेसजासि, विस्मित गुलामराम बुद्धि हनुमान की ॥७८॥

मुद्रिका कहति मोको ल्यायो है समीर सूनु, जानकीजू कीजिये प्रतीति रामदूत की। रावरो सँदेसो कोसलेस को सुनै हैं कपि, बुद्धिमान आपहू इहाँ न गति धूत की॥ आतुर असोक तें उतरि आयो आंजनेय, चरनसरोज नयो संका नहिँ सूत की, प्रेष्य प्राननाथ को पठायो

धूत=ठग। आञ्जनेय=हनूमान। सूत=प्रबल, रावण। प्रेष्य=धावन, दूत।

हेरि रही रमा, हेरनि गुलामराम करुना अकूत की ॥७९॥

नाह को वियोग रवि उयोहै अकासउर, वपुष तड़ाग मेरो छिन छिन छीन भो। निघटत नीर बल बाढत कुरूप काई, कैरव करन कपि विकस विहीन भो॥ वारिचर प्रान अकुलान लागे ठौर ठौर, कहति विदेहजा चकोर चित्त दीन भो। वदत गुलामराम ससि घनस्याम राम, विगत विराम मन मोरहू मलीन भो ॥८०॥

कह्यौ राम रावरे वियोग विपरीत गति, जानै कौन जानकी जनावैं जाहि जाइ कै। भानु के समान ससिपावक समान कंज, वज्र के समान वात लागै अंग आइ कै॥ अब्जजोनिराति के समान ना विहाति राति, तारक तपत ताकि रहौं हाइहाइ कै, वदत गुलामराम प्रबल प्रचंड काम, सुमन सरासन सँधारै सर धाइ कै ॥८१॥

पेखि लघु तोकौं होति संका अति मोकों सुत, सीय कहै ऐसे कपिनाथ साथ आवैंगे। बड़े विकराल बलवान जातुधान लंक, कैसे कै मुरारि सों सुकंठ जय पावैंगे॥ सुनिकै कुजा के वैन

अकूत = बेप्रमाण। करन = इन्द्रिय। अब्जजोनिराति = ब्रह्मा रात्रि। तारक = तरई। कुजा = सीता।

मारुति बढ़ायो वपु, मेरु के समान देखे भीम दृग तावेंगे। वदत गुलामराम भूमिजा लह्यौ बिराम, जान्यौ कोसलेस जस संभु विधि गावेंगे ॥८२॥

सूर ससि पावक पवन पासी धनाधिप, समन सुरेस सुर असुर मिलैं सबै। गनप गिरीस गौरि गोपति गरुड़गामी, लंकपति तेरी तेउ कुमक करैं जबै॥ मारुति वदत रघुवीर वैर वारिनिधि, रावन सबंस बूड़ि जाइगो तऊ तबै। प्रभुहि गुलामराम आयसु न दीन्ही मोहि, सहित सहाय तोहि दलतो अघी अबै ॥८३॥

सवैया—ताड़का तूल दही इषु पावक, नीर सुबाहु सरातप सोषे। पन्नगपीन पिनाक पतत्रिय, वीर विराध वध्यौ रिषि तोषे॥ सेन समेत हने खरदूषन, हेमकुरंग कि प्रानहु मोषे। रामगुलाम दसानन कुंजर केहरि राम कहै कपि रोषे ॥८४॥

राघव रोष महानल रावन, नैरित पुंज पतंग जरैंगे। लंक विमर्द्दि मिलावहिँ पंकहि, रे न

पासी=वरुण। समन=यमराज। गोपति=विष्णु। कुमक=सहायता। तूल=रूई। इषु=बाण। पतत्रिय=पक्षी। पन्नगपीन=अजगर।

कपर्द्दि सहाय करैंगे ॥ वारिदनाद घटस्तुति सूदन बीसभुजा दससीस हरैंगे । रामगुलाम ससीय सहानुज, रामहिँ पेखि प्रमोद भरैंगे ॥८५॥

कवित्त—जाही आगि जारे हेम मंदिर अपार पुनि, जाही आगि मध्य जातुधान धारि दली है। जाही आगि जारे गजराज वाजिराज रथ्थ, जाही आगि जारे मनि मानिक की मही है ॥ जाही आगि जारे अस्त्रसस्त्र भाँति भाँति भूति, देखत दसानन महान त्रास लही है। वदत गुलामराम राम को प्रतापपुंज, सोई आगि हनूमान को श्रीखंड सही है ॥८६॥

फटिकसिला पै बैठे देखि दोउ बंधुवर, गोरे साँवरे सरीर पुंडरीक नैन हैं। जान्हु लगि लंवित विसाल वाहु सीसजटा, उन्नत सुकंध कंवु कंठ बल ऐन हैं। मुनिपट धारी साधु सेवक प्रमोदकारी, सरद मयंक मुख कहैं हँसि वैन हैं। कपिन्ह समेत आइ चरन गहे सुकंठ, सीय सुधि सुने तें गुलामराम चैन हैं ॥८७॥

देहुँ कहा तोकों कपि कहत कृपाल राम, मेरी कुसलाई कहि जश्नकी जिआई है। मैथिली

कपर्द्दि=शिव । नैरित=राक्षस । घटस्तुति=कुम्भकर्ण। सूदन=नाशकर्त्ता । श्रीखंड=चन्दन ।

वियोग सिंधु बूड़त बचायो मोहि, राख्यो रघु-वंस कोसलेस की दोहाई है ॥ सुंडादंड बाँहुन तें कीस को लगायो हिये, जान राम गाई निज भगत बड़ाई है। स्वामी की कृतज्ञता सराहत विबुधवृन्द, कीरति गुलामरामहू के मन भाई है ॥ ८८ ॥

सवैया—श्रीरघुनाथ चढ़े जब लंकहि, देवन के उर फूल भई है। संग विसाल कराल बली-मुख, वीर सबै रनरीति लई है ॥ लात अघात उठी महि ते रज, कंपित भानु न बात नई है। रामगुलाम सुजान सुनौ तम रोदति सूर उदै चकई है ॥ ८९ ॥

कवित्त—सोनेसों सँवारे पंख वज्र के समान भारे, वायु वेगवारे अनियारे मानि लीजिये। राम सर प्रबल प्रचंड कालदंडहू ते, समर सरोष भये कैसे करि जीजिये ॥ जौलौं लंकनाथ दसमाथ न हनततौलों, कहत विभीषनजू मेरो कहा कीजिये। छाँड़ि अभिमान को गुलामराम पाय गहौ, चहौ जीवदान तौ विदेहसुता दीजिये ॥९०॥

राजिवनयन विधुवदन बलन्द कंध, वारिद

फूल=प्रसन्नता। वलीमुख=बन्दर। अघात=चोट। पख=बाण का पिछला भाग। अनियारे=नुकीले। बलन्द=ऊँचा।

वरन वपु सुखमा की हद हैं। जान्हु लौं विसाल वाहु लसत नराच चाप, मुनि पट तून कटि मेटत दरद हैं॥ जोर भरे जंघा जान्हु चरन सरन पाल, मधुर गँभीर बोल महामोद प्रद हैं। वदत गुलामराम विवुध बखानै राम, कामतरु नाम ये विभीषन वरद हैं ॥८१॥

हरि को सरोष जानि धरी भेंट सिंधु आनि, विनती सुनाइ गाई आपनी अधीनता। तुम्ह रघुनाथ विस्वनाथ रमानाथ राम, जाहिर जलधि जड़ दंड समीचीनता। देत दुख भारी ये अभीर वसि तीर मेरे, सुख मुसुकाने प्रभु पेखि ताकी दीनता। सर सों गुलामराम सकल सँघारे वाम, कह्यौ सरितेस सेतु बाँधे जस पीनता ॥८२॥

लंका काण्ड

सवैया—तैं तिनको अब दूत बन्यौ कपि, बाप बध्यौ जिन्ह देखत तेरे। नेकु न लाज लगै तोहि को सठ, बूड़ि मरै न मिलै जल हेरे॥ देहुँ चमू तव संगहिं अंगद लै पितु वैर निबाहि सवेरे। रामगुलाम सुरारि गिरा सुनि बालितनै तव नैन तरेरे ॥८३॥

समीचीनता=उत्तमता। सरितेस=सिन्धु। पीनता=पुष्टता।

कवित्त—जाके प्रतिहार है दिनेस देखु द्वारे पर, सजिकै सुमाल सचीनाथ पहिरावहीं। छपाकर दंड को लियेई रहैं माथे मम, पावक प्रवीन सदा पाक को बनावहीं॥ जल को जलेस भरैं भौन पौन झारू करै, देव नरदेव जाहि केते सिर नावहीं। कहत गुलामराम अंगद सों रावन यों, ताकी समता को राम कहे किमि पावहीं? ॥८४॥

सवैया—श्रीरघुवीर धरे धनु सायक, संजुग में जब आइ अरैंगे। रावन बीसभुजा दससमस्तक, कौतुक ही पल माहिँ हरैंगे॥ जौं सठ गर्व करै हर को उर, सो न कछू उपकार करैंगे। रामगुलाम अजौं मिलु रामहिँ, और उपाउ न काज सरैंगे॥८५॥

राम पिनाकहि भंजि वरी जब, क्यों तुम जीति लही नहिँ ताही। औ खरदूषन के बध को सुनि, वीर हुते झगरो किन ताही॥ सूपन-खा गति पेखि भया नहिँ, गाल बजावत नाथ वृथा ही। रामगुलाम कहे मयनंदिनि, सीय हरी हठि मीचु बिसाही॥८६॥

प्रतिहार=दरवान। दंड=पताका का बाँस, झंडा। सरै=निकलेगा, चलेगा। भया=डर।

मारुतपूत पयोनिधि को तरि, वाग उजारि वधे रखवारे। लंक जराइ सुखाक करी सब, ये तुमहूँ पिय देखनिहारे॥ सीय प्रबोधि गयो सुखसंजुत काह किये रजनीचर सारे। रामगुलाम मिलौ रघुवीरहि काम सरै नहिँ वातन्ह मारे ॥८७॥

अङ्गद आइ कही हित की पिय, सो न सुनी ममता मद छाके। टारि सके जेहि को पद नेकु न पौरुष पेखि सभासद थाके॥ कान करी न विभीषन की सिख, भे रघुबीर सहायक जाके। रामगुलाम न मानत रावन, वैन सुहावन मै तनुजाके ॥८८॥

कवित्त—वीररस नीरभरयौ स्वसन सरोष स्वाँस, पर्वत नखास्त्र जल जंतुन्ह तें भै करै। बोला बालिसूनु सुगरीव की न मानै आनि, लहरि लँगूरन्ह सों मेघगन को हरै॥ लंकपुर पौरिवे को अहि त्रिन पौरिवे को, प्रवल प्रचंड वल वेग को न तौ धरै। वदत गुलामराम वाहिनी अनेक-जुत रामदल दूसरो समुद्र उमगो परै ॥८९॥

लक्खन सुकंठ हनुमान जाम्बवान जहाँ, अङ्गद मयन्द नील नल लंकनाथ हैं। केसरी कुमुद

वातन्हमारे=गप हाँकने से। स्वसन=पवन।

गंधमादन गवाक्ष गज, सरभ सुषेन तार विनत सुसाथ हैं ॥ दधिमुख द्विविद सौवली औ पनस धूम्र, गवय सरोष सूर सब जूथनाथ हैं। कहै सुक सारन गुलामराम रावन सों, रावरो कहा है विस्वजई रघुनाथ हैं ॥१००॥

सवैया—घेरि लई गढ़लंक चहूँ दिसि, गर्जत तर्जत भालु वलीमुख। सूर समथ्थ अकथ्थ पराक्रम हथ्थ धरे तरु पव्व महासुख ॥ रोष भरे रनराग भरे सब चाहत हैं रघुनाथहि को रुख। रामगुलाम अभै प्रभु के बल, रावन राँड़ के हाड़ करैं तुख ॥१०१॥

रावन आयसु पाइ चढ़े रन नैरितवृन्द बजाइ निसानहिं। सक्ति त्रिसूल कृपान गदा दृढ़, चक्र भसुंडि धरे धनु बानहिं ॥ भीर भई भुवि भूरि भयंकर, देखत देव न धीरज आनहिं। रामगुलाम रघुत्तम के बल, कीस न कालहु को डर मानहिं ॥१०२॥

कवित्त—कोपि कपिकुंजर गरजि गरबीले वीर, दौरिदौरि जातुधान धारि सिंधु बोरहीं। चरन प्रहार तरु पर्वत प्रहार करि, उदर विदारि

तुख=भूसी, सारहीन। नैरितवृन्द=राक्षससमूह। भसुंडि=बन्दूक।

बड़े सीस भुज तोरहीं ॥ एकन्ह लपेटि लूम उड़त अकास सोहैं, एकै एक सोनित सरित तन खोरहीं । वदत गुलामराम पेखि मुसुकात राम, चपरि चपेट मारि दपटि दबोरहीं ॥१०३॥

कबहूँ उपारि तरु पर्वत प्रहार करैं, कबहूँ भिरत वली पाइ जातुधान को । कबहूं गयन्दन सों मारत गयन्दन्ह को, वाजिन्ह ते वाजि मारि रथन्हि रथान्ह को ॥ कबहूं लंगूर ते लपेटि लेत भूरि भट, लातन्ह सों मर्द्दै करै घोर घमासान को । निरखि गुलामराम विबुध प्रमोद भरे, सानुज सराहैं राम वीर हनुमान को ॥१४०॥

सवैया—लक्खन औ घननाद परस्पर, वीर महारनधीर भिरे हैं । जुद्धकला कुसली बल वारिधि, व्योम विलोकत देव थिरे हैं ॥ एकहि एक हनै न गनै श्रम, घूमत घायल भूमि गिरे हैं । रामगुलाम छली मघवाजित, राघवबंधु अधर्म तिरे हैं ॥१०५॥

कवित्त—सुनि रघुवीर गिरा अंजनीकिसोर बोल्यौ, जौपै जानकीस आप आयसु को पावों मैं । पैठिकै पताल दलौं व्यालजाल विना श्रम,

---

खोरहीं=स्नान कराते हैं । चपरि=छुपक कर, शीघ्र ।

गहिकै पियूषकुंड भूमि मध्य ल्यावों मैं ॥ अथवा सुधाकर के सुधा को निचोरि लेहुँ, भानु को भुअन भेदि बाहेर पठावों मैं। वदत गुलामराम जम को जरूर बधौं, जौपै तोपै साँचों रामसेवक कहावों मैं ॥१०६॥

सीस सों सँवारि जटा कटिन्ह निषंग कस्यो, नागभोग भुजनि धनुष बान धरे हैं। सम्ख रनाजिर सिधारे रघुनाथ पेखि, देवगन वर्षत सुमन सुख भरे हैं॥ जनकसुता के सुभ अंगनि सगुन होत, अनायास मुकुट सुरारि खसि परे हैं। वदत गुलामराम लंक मों अतंक भयो, डोलति धराहू धराधर थरहरे हैं ॥१०७॥

सवैया—गौर सरीर विसाल भुजा वर लोयन्ह कोयन्ह भै अरुनाई। अंग सबै रसवीर उमंगत मंगल की उपमा सुख पाई॥ सोहत सीस जटा मुकुटाकृति. ठौनि लखे मृगराज लजाई। रामगुलाम अनंत पराक्रम, वेद विरंचि सकैं नहिँ गाई ॥१०८॥

श्रीरघुनन्दन को करि वंन्दन, संजुग मों तब लक्खन रोषे। तानि सरासन सायक सों, निज मारत भे रिपु को सिर तोषे॥ व्योम

ठौनि=बैठने या खडे होने का ढंग। तोषे=प्रसन्न हुए।

निसान बजे बहु भाँतिन्ह, मोद बढ़े अघसागर सोखे। रामगुलाम प्रसन्न सियापति, लंक भुआल लहे दुख चोखे ॥१०८॥

कवित्त—वाहन बनाइ वीर वांकुरे विरद बांधे, वपुष विसाल वेग वारिद सबै सजे। संग दससीस के चले हैं जातुधानगन, समर सरोष है निसान बहु हैं बजे॥ थकित समीर भूरि भार अकुलानी महि, धराधर कंपै लोकपाल धीरता तजे। वदत गुलामराम पेखि मुसुकाने राम, धरे धनुबान पानि कामकोटि सों लजे ॥११०॥

वारवार वाहु सीसकाटत कृपालराम, होत फेरिफेरि लंकनाह के नवीन हैं। जोगिनी जुड़ानी काली करत रुधिरपान, मज्जत समर-सरि भूत प्रेत पीन हैं॥ सुभट कपाल करताल को बजाइ तहाँ, गावत वेताल वृन्द प्रमथ प्रवीन हैं। वदत गुलामराम नाचतीं पिसाच-वधू, काक कंक फेरु स्वान कोऊ तौ न दीन हैं ॥१११॥

जानकी समेत राम राजत समरभूमि, तरुन तमाल मानों कनकलता लह्यौ। भालु कीस

धराधर=पर्वत। वेताल=पिशाच। प्रमथ=एकजाति के प्रेत। कंक=चिल्होर। फेरु=शृगाल।

सकल निहारि रहे सोभा महा, अमर अनन्दे हैं न जात मुख सों कह्यौ ॥ विद्याधर गावत नटत नभ देववधू, दाहत दराज दुख दोष सब को दह्यौ । वदत गुलामराम प्रभु को रजाय पाय, जिष्णु ने जिआये मर्कटादि भर्ग को गह्यौ ॥११२॥

देखु रनभूमि पेखु सेतुबंध भूमिसुता, सम्यक सुकंठनृप नगरी विलोकिये । पंपासर सुभग मतंग-थल पंचवटी, गौतमी अगस्तिवास चाहि चष रोकिये ॥ चारु चित्रकूट भानुजा पुनीत गंगा लखु, पावन प्रयाग अवलोकत विसोकिये । अम्बुजवदनि यह अवध प्रनाम करु, कह्यौ रघुनाथ जो गुलामराम सो किये ॥११३॥

उत्तर काण्ड

कवित्त—रतन सिंहासन विराजे राजा रामचन्द्र, अंग अंग भूषन वसन वर साजे हैं । सीता महारानी बनी बैठी दिव्य वामभाग, जुगल सरूप पेखि रति मार लाजे हैं ॥ वेद वंदी

जिष्णु=इन्द्र, देवराज । भर्ग=तेजधारण, जीवित होना । सम्यक=अच्छी तरह । गौतमी=गोदावरी नदी । भानुजा=यमुना ।

रूप धरि सुजस बखानै चारु, वृन्द वृन्द देववधू नाचैं बाजैं बाजे हैं। वदत गुलामराम आत्म अभिषेक भये, दासरथी दीनबंधु को को न निवाजे हैं॥

छप्पै—सुभ दिन सोधि वसिष्ठ वेदविधि रितुवसंत महँ। महाराज अभिषेक कियो श्रीरामचन्द्र कहँ॥ विप्रबृन्द बहु पढ़हिँ मंत्र रच्छा सिच्छा जुत। नाचहिँ नभ उरवसी देव बोलहिँ जय जय हुत॥ मुनि नारदादि सनकादि सुक, अज महेस अस्तुति करहिँ। लखि रामगुलाम कुजेस छवि, मातु सकल आनँद भरहिँ॥ ११५॥

कियो विविध विधि बोध बालिसुत को रघुनंदन। कह्यौ किष्किँधा जान हेतु भाख्यो जगवंदन॥ तोहि बिनु तारा दुखित दुःख होइहि सुकंठ कहँ। तनय न तिन्ह के और तात सोचहु यह मन महँ॥ प्रभु निज मनि माला बसन, दै पठयो अति प्यार सों। भजु राम गुलाम खरारि पद, ह्वै विरक्त संसार सों। ११६।

सवैया॥ उच्च अवास लसै कलसा कल,

आतम=अपना। हुत=होमी हुई। कुजेस=रामचन्द्र। अवास=मन्दिर।

चत्वर चारु वितान तने हैं। विद्रुमद्वार कपाट जड़े पवि, मोतिन्ह वंदनवार बने हैं॥ कंचन खंभ महामनि मंडित, भू गच काँच सुगंध घने हैं। रामगुलाम जहाँ नृप राम न, औधपुरी गुन जात गने हैं॥ ११७॥

कामदधेनु भई सुरभी सब कामलतानि समान लता हैं। साखि सुरद्रुम के सम सोहत, जोहत मोह तजे विरता हैं॥ कूप अनूप तड़ाग अलौकिक, लोकप लोक नहीं समता हैं। राम गुलाम सुखी पुर के नर पालक राम रमा-भरता हैं॥ ११८॥

वंस विसाल सबै सुचि सुन्दर, सूर सुजान अजान न कोई। संपतिवंत सुखी सुरसेवक, कीरति साधु समाजहु होई॥ मानत मातुपिता गुर विप्रहि, श्रीपति सों रति भाव भलोई। रामगुलाम रमेस प्रजा धनि, भाग बड़े उन्हके सम ओई॥ ११९॥

प्रीतिप्रतीति बढ़ी पुर पावन ईति की भीति नहीं महि माहीं। मत्सर मान मनोज मदादिक त्यागि गये दसहूँ दिसि काहीं॥

चत्वर=चौरस्ता। वितान=मंडप। विद्रुम=मूँगा। पवि=हीरा। साखि=वृक्ष। सुरद्रुम=कल्पवृक्ष।

दारिद दोष दुरास दुराग्रह, दंभ दुराउ रहे कहुँ नाहीं। रामगुलाम रमेस प्रजा सुख, जक्षप कंप सचीप सिहाहीं ॥ १२० ॥

सौम्य सबै ग्रह भानु तपै रस, चंद सदा सुख देत अनंदहि। जीवन दानि समौ उद वर्षत, वात बहै सुचि सीतल मंदहि॥ सागर सींव रहे रतनप्रद, भे मनि आकर सैल सुछन्दहि। रामगुलाम जहाँ नृप राघव, सेष न भाखि सकैं गुन वृन्दहि ॥ १२१ ॥

रूपवती जुवती सुचि सुन्दरि, भावभरी पति के अनुकूलहि। भाग सुहाग भले कुल संभव, अंगसजे नग दिव्य दुकूलहि ॥ गावत गीत रघुत्तम के नित, भूरि सदा सरजू सरि कूलहि। रामगुलाम पुरी अवलोकत, क्यौं न मिटै सब सूल समूलहि ॥ १२२ ॥

आधि न व्याधि न अल्प न आतप वारि बयारि न भीति विसेखी। पाप न ताप न पावक भै रिपु सीत नहीं पविपात न पेखी ॥ वंचक चोर नहीं अहि बाधक, बाघगज एक

उद=जल। नग=नगीना। दुकूल=वस्त्र। कूल=किनारा, तीर। आधि=मानसिक व्यथा। भीति=डर। पविपात=वज्रपात। वंचक=ठग।

ठाहरदेखी। रामगुलाम रघुत्तम ठाकुर, सीय जहाँ ठकुराइनि लेखी ॥ १२३ ॥

रामचरित्र पवित्र सुनै श्रति, गावत रामहिँ के गुन नागर। राम को नाम जपै निसिवासर, पूजत रामहिँ को मतिआगर ॥ रामलिये मुख बात कहैं कछु, रामसरूप लखै सुखसागर। रामगुलाम रम्यौ मन रामहिँ, राम प्रजा सब-भाँति उजागर ॥ १२४ ॥

कवित्त—बड़े वंस नवत अनम्र जहाँ वंसही है, नदिही कुटिल कोऊ कुटिल न नारी हैं। परसु सदंड हैं विदंड पुरवासी सबै, धनुष सछिद्र गुन गुनी ना विकारी हैं ॥ कोकही वियोगी हैं सँयोगी भोगवंत नर, दुख ही दुखित जीव-जंतु ना दुखारी हैं। वदत गुलामराम भये जग राजाराम, कंज सकुचात मुख कंज तौ सुखारी हैं ॥ २२५ ॥

पीन भई समता विषमता सुखीन भई, हीन भई कुमति कठोर सब ठाँई की। दीन भई दीनता प्रवीनता नवीन भई, लोक लोक भक्ति भई त्रिभुवन साँईं की ॥ मोह निसि

वंस=कुल और बाँस। सुखीन=अच्छी तरह दुर्बल।

लीन भई विद्या समीचीन भई, पावन पुहुमि भई कामधेनु नाँई की । वदत गुलामराम राज जग राजा राम, रही ना कुचालि कहूँ नेकु घाँईपाँई की ॥१२६॥

रजनी सिरानी प्राची दिसि अरुनानी नभ, नखत मलीन दीन दीपज्योति देखिये । डोलत समीर सीर बोलत विहंग भीर, फूले कोक कोकनद नैन उनमेखिये ॥ उदित तमारि प्रमुदित लोक सोकगत, सीतापति सारिका वचन साँचे लेखिये । दीजिये दरस देव कीजिये सनाथ सबै, वदत गुलामराम विरह विसेखिये ॥१२७॥

प्रात समै सरजू सहानुज निमज्जि राम, साँवरे सरीर सुभ्र पीतपट धारे हैं । राकापति वदन सदन सुखमा के सदा, उन्नत विसाल भाल तिलक सँवारे हैं ॥ उर मनिमाल मुक्तमाल वनमाल कान, कुंडल ललित बड़े नैन वैन प्यारे हैं । गज गतिवारे गजराज उधरनिहारे, निरखि गुलामराम सज्जन सुखारे हैं ॥१२८॥

सवैया—कोइ करै जम नेम सुआसन, सोधि

समीचीन=श्रेष्ठ । घाँईपाँई=धोखेबाजी । उनमेखिये=उघारिये, खोलिये । सुभ्र=सुन्दर ।

ईड़ादिक प्रान चढ़ावै। इंद्रिन्ह खैंचि करैं घट भीतर, भूलि विषै नहिँ चित्त चलावै॥ धारन ध्यान समाधि सँवारत, सिद्ध भये पुनि सिद्ध कहावै। रामगुलाम सबै तजिकै कलि, जानकीनायक के गुन गावै॥१३०॥

कोउ करै बहुदान दमी दिन, जो विधि वेद पुरान बतावै। अन्न धरा धन धाम गजादिक, दीनहिँ देखि दया उपजावै। नारि तनै तन देखि सुखी मन, एक सदा परमारथ भावै। रामगुलाम सबै तजिकै कलि, जानकीनायक के गुन गावै॥१३१॥

कोउ चतुर्दस पाठ पढ़ै बुध, आखर अर्थ भले समुझावै। कर्म उपासन ज्ञान कथा कहि लोगन्ह को सुभपंथ लगावैं॥ वाद विवाद विषाद न धोखेहु, मान मदादि हिये नहिँ ल्यावै। रामगुलाम सबै तजि कै कलि जानकी नायक के गुन गावै॥१३२॥

कोउ कवीस्वर काव्यकलानिधि, छन्द-प्रबंध विधान बनावै। भूषन भाव भले, रस

इड़ा=एक प्रधान नाड़ी का नाम जो बाँई ओर पीठ की रीढ़ से नाक तक है। धारन=स्मृति, ध्यान में रखने की वृत्ति। दमी=इन्द्रिय-दमन। चतुर्दसपाठ=चौदह विद्या।

राखत, नागरि नागर भेद बतावै। उक्ति अनेक अनूठि अनूपम कूट कठोर कहे सुखपावै। रामगुलाम सबै तजिकै कलि, जानकीनायक के गुन गावै ॥१३३॥

कोऊ गुनी गुनवन्तन्ह में जग, जाहिर होइ पती अतिपावै। सूर समर्थ कोऊ नृप को प्रिय बानहिँ बाँधि सुधीर कहावै॥ कोउ करै व्यवहारनि को बहु साख बढ़ाइ कै दाम बढ़ावै। रामगुलाम सबै तजि कै कलि, जानकीनायक के गुन गावै ॥१३४॥

ज्योतिष वैदिक कोक समुद्रिक नाटक नीति कोऊ मन लावै। जंत्रहु मंत्रहु तंत्रहु जानत सोधत साधत जन्म बितावै॥ सब्दसहाब्धि विचार विचच्छन कोउ कहूं सरवज्ञ कहावै। रामगुलाम सबै तजि कै कलि जानकीनायक के गुन गावै ॥१३५॥

ग्राम विहीन विहीन स्वरादिक, रागहु रागिनि भेद बतावै। ताल न जानत तान न जानत, घाट बँधान की कौन चलावै॥ देव नरासुर बाग गिरापति एक नहीं केहि भाँति

कूट=दृष्टकूटकाव्य। पती=इज्जत, बड़ाई। साख=मर्यादा। बाग=सरस्वती। गिरापति=ब्रह्मा.वाणी की इज्जत

बुझावै । रामगुलाम सबै तजि कै कलि जानकी-
नायक के गुन गावै ॥१३६॥

कबित—यज्ञनाथ जगनाथ जगती जलेसनाथ,
जिष्णुनाथ जमनाथ जच्छनाथ नाथ हौ। जान-
की के नाथ जीवनाथ जामवंत नाथ, जामवं-
तीनाथ जदुनाथ श्रुतिनाथ हौ ॥ रमानाथ
राधानाथ रंगनाथ रामनाथ, रुक्मिनी के नाथ
नाथ कृपापाथनाथ हौ। गोपनाथ गोपीनाथ
गोकुल गरुड़ नाथ, गावत गुलामराम सुभगुन
गाथ हौ ॥१३७॥

सोम सम कहौं तौ कलानिधि कलंकी
सुन्यौ, पंकज से कैसे कहौं पंक को नँदन है।
काम मुख सम जौं बखानौं राममुख आली, सोऊ
ना बनत देह वर्जित मदन है ॥ अमल अनूप
आधि व्याधि तें विहीन सदा, वानी को
बिलास कोटि कल्मष कदन है। वदत गुलाम-
राम एकरस आठो जाम, सोभा को सदन राम-
चन्द्र को वदन है ॥१३८॥

देखिराम स्यामघन दामिनि दसन दुति,
कृपादृष्टि वृष्टि-तजि अनत न राँचैगो। गिरा

सोम=चन्द्रमा। पंक=कीचड़। नँदन=पुत्र। कल्मष=
पाप। कदन=नाशक।

गरजनि जाकी झकनि मधुर भूरि, पूरि कै अनंत सुख निजानंद माँचैगो ॥ प्रीति रितुपावस उदै के भये गये ताप, सीतल समीर सांति काम घाम बाँचैगो । वदत गुलामराम एक रस आठो जाम, मेरो मन मुदित मयूर कब नाँचैगो ॥१३८॥

रूप सुधा सलिल अगाध सदा एकरस, नाना कंज के समान अंग अंगधर को । नैन झष जामैं रोमराजी से सेवार तामें, हास भास विविध विलास वीची वर को ॥ मोतिन की माला उर अंगद है चक्रवाक, भूषन अनेक जल-जंतु सोभाकर को । वदत गुलामराम पावैगो बड़ो विराम, मो मन मराल कब ह्वैहै रामसरको ॥१४०॥

भानु के उदै को निसि चाहत है कोकी कोक, मेदुर मयूरहू जुराफो जुरो संग है । मीन जल चाहै लोहो चुम्बक धरत धाइ, चन्द को चकोर चाहै दीपक पतंग है ॥ सारस मधुप कामी कामिनी लुबुध धन, फनिक मनिक राग रागी ज्यों कुरंग है । वदत गुलामराम त्यागि त्यों सकल काम, मेरा मन लागै राम रावरोई अंग है ॥१४१॥

कोकी कोक=चकई चकवा । मेदुर=सघन मेघ । जुराफा= अफ्रिका का एक जङ्गली पशु जो गोल बाँध कर रहता है ।

गंगाजल अमल अमन्द मकरन्द वर, सुजस सुगंध गाइ बेदहू न तरिगो। परानन्द पावन पराग परसत सुख, रमा रतिमानी जाको चित्त वित्त हरिगो॥ सुक सनकादि नारदादि हंस सेवैं सदा, वदत गुलामराम तोहि क्यों बिसरिगो। राम-पद पंकज विहाय हाय मोहबस, मन भृंग विषय बबूर वन परिगो ॥१४२॥

सारद सरोज सोन सुन्दर सरूप केरे, गंग के जनक जेई वेदन बखाने हैं। अंकुस कुलिस कंज केतु जब चिन्हित हैं, सिला के सुगति दाता ज्ञाता जग जाने हैं। नखत से नख लोने लोने विलसत गात, मोदित मतंगहू की गति सति भाने हैं। वदत गुलामराम राम अंघ्रि अभिराम, कामदविटप जेई सेवत सयाने हैं॥१४३

जान्हु लगि लम्बित करिन्द कर के समान, नाना दान देत दिन जग सिंधु सेत से। खंड्यौ जिन्ह हरचाप प्रबल प्रताप पेखि, पूज्यो जे परसु-पानि बल के निकेत से॥ पाय ताप दोष दुख दारिद दलनिहारे, विस्व रखवारे मारे रावन अचेत से। वदत गुलामराम रामवाहु अभिराम, एक से अनेक करिवे को कुरुखेत से ॥१४४॥

करिन्द=गजेन्द्र। परसुपानि=परशुराम।

सील के समुद्र सुखमंदिर कृपा के पुंज, सुखमा की सींवाँ सम सरद सरोज के। कोमल अमल चारु चातुरी चटक भरे, जोहत हरत मन मोहत मनोज के॥ सुचिता सुगंधता बखानै ऐसो कौन कवि, अरुन सितासित सँवारे विधि चोज के। वदत गुलामराम राम नैन अभिराम, चीकने रसीले बड़े दानी महामौज के॥१४५॥

पाय पंकजात की पुनीतता अहल्या जानी, सुंडादंड वाहुबल जान्यौ है पिनाक ने। राम रोष जानै सिंधु सूल सहि बाँधो गयो, रीझि जानै राजा भो विभीषन वराकने॥ काय कमनीय कोमलाई जानकी ने जानी, जानी है कठोरताई रावन निसाकने। दीनबंधुता को नीके जानत गुलामराम, जाको जग काहू के न द्वारा परै झाँकने॥१४६॥

नरपति नागपति नारपति नाकपति, पशुपति प्रेतपति बड़े धाम धाम हैं। गदाधर गुह्यपति गोप गंध्रवती पति, गनप गिरा के पति गाये गुनग्राम हैं॥ पाहन पवित्र वन वाहन विषे हैं किय, रावन सकुल गये काके भये वाम

चोज=व्यंग पूर्ण उपहास। महामौज=औलिया मन के। वराक=तुच्छ, ग़रीब। निसाकन=राक्षस।

हैं । वदत गुलामराम काहू सोँ न मेरो काम,
सीता महारानी महाराज राजा राम हैं ॥१४७॥

सीता महारानी महाराजा राजा रामचन्द्र,
बाबू बड़े भरत लखन भैया भावते । कौसिला
सी माता औ वसिष्ट गुनज्ञानदाता, सचिव सुमंत्र
नीके मंत्रनि बतावते ॥ सखा सुगरींव सुचि स्वामी
के सनेह राँचे, सरजूसरित को नहान पान
पावते । वदत गुलामराम वासहू अवध धाम,
हनूमान चारोजाम चवकी को आवते ॥१४८॥

अमर महेस सो प्रजेस सम विद्यावंत, सेष
सम सक्ति औ गनेस सम धी अपार । रोमरोम
वदन वदन प्रति कोटि जीह जीहप्रति कोटिकोटि
सारदा करै अगार ॥ भूख प्यास निद्रा तंद्रा विगत
वपुष जाको, सावधान संतत बखान करै बारबार ।
वदत गुलामराम सुनो महाराज राम, रावरो
सुजससिंधु सोऊ नहीं पावै पार ॥१४९॥

ताड़का को तारी औ उधारी नाथ विप्र-
नारी, सवरी सुधारी सो तौ मानी सम माइ है ।
द्रौपदी पुकारी बढ़ी सारी सिसुपाल भीति,
भीषमदुलारी दौरि हरी जदुराइ है ॥ लंकनाथ
विवस विसेषि वैदेही दुखी, सुखी करि मारि

रिपु सहित सहाइ है। विनती गुलामराम सुनिहौ न जौपै राम, दूसरो दयाल दुनी दीन कहाँ पाइ है ॥१५०॥

गज की गरूरता कठोरता सिला की सब, कानन भयावनता नेकहू न बाँची है। गनिका की कुमति अजामिल अधमताई, व्याध अपुनीतता चतुर विधि जाँची है॥ सकल समेटि एक मोही सो बनायो जग, वदत गुलामराम बात यह साँची है। रावरे विरद को निवाह राम देखो चहौं, तारिहौ न हारिहौं हजूरही उमाँची है॥१५१॥

धरा धन धाम वाम सोदर सुहृद सूनु, सेवक-समूह आपु पुरुष प्रमाथी है। बाजिराज वारन हैं वहल हजारन हैं, गाढ़ो गढ़वाची बीर महा-रथी भाथी हैं॥ लवा ज्यों सचानक अचानक गहैगो काल, प्रान की परैगी तोहि लेइ हाथा हाथी है। वदत गुलामराम आवैगो न कोऊ काम, राख्यो जिन्ह हाथी सोइ साँकरे को साथी है॥१५२॥

उमाँची=ऊपर उठाया। प्रमाथी=क्षुब्ध करनेवाला। महारथी=जो दस हज़ार वीरों से अकेला युद्ध कर सके। भाथी=मृतकश्वास। सचानक=बाज़पक्षी।

राजन्ह के राजा अरु देवन्ह के देव राम, जगतपिता के पिता पतिहू के पतिहौ। बुद्धि-पति सिद्धिपति सिंधु की सुता के पति, भगति भुगुति पति मुगति सुगति हौ॥ दारिद दवानल बुझाइबे को वारिधर, प्रानहूँ के प्रान नाथ मतिहू की मति हौ। वदत गुलामराम पतितपुनीत नाम, चिंतामनि कामधेनु कामतरु अति हौ॥१५३॥

भानु के उदै तें तम नासत बिनाही स्रम, ससि कै उदै तें ताप आपु ही विलात है। पारस परस लोह कंचन कहत जग, जाह्नवी दरस तें अनेक अघ जात है॥ देवतरु तरे गये कामना सुफल होत, राम नाम लेत को न राम में समात है। वदत गुलाम राम इहाँ न तरक काम, उकुति जुगुति साँची झूठी सब बात है॥१५४॥

सवैया—श्रीहरिनाम विहाइ सुधारस, चाहत मूढ़ विषै विष चाखो। वादि बकै बहु वातन्ह को, कटुतुंवरि बेलि फरै कहुँ दाखो॥ व्याध अजामिल वारन तारन, वारमुखी सुक की सुनु साखो। रामगुलाम अबै भल औसर, फेरि मिलै न दिये जग लाखो॥१५५॥

दाख=मुनक्का। वारमुखी=वेश्या। साखो=गवाह।

कन्द कहा मकरन्द कहा पुनि दूध दही अभिलाष न घी के। दाख बदाम छुहार चिरौंजिहु, स्वाद किती अधराधर ती के॥ या रसना रसवादिनि वादिनि वेद विचारि कहै कवि नीके। नामपियूष पियो जिन्ह है तिन्ह रामगुलाम सबै रस फीके॥१५६॥

वर्ष हजार लर्‍यौ जब ग्राहक, हारि पर्‍यो, हहर्‍यौ हिय माहीं। देखत संभु विरंचि सबै सुर धीरज तौ न दियो कहि ताहीं। नामहिँ लेत उबारि लियो करि, जान अजानहुँ वेद कहाहीं। रामगुलाम बिना रघुनायक, दीन सहायक दूसर नाहीं॥१५७॥

जिन्ह के पग में पनहीं न सुनी तिन्हको गज बाजि चढ़ावत हौ। जिन्ह सागहु पेट भर्‍यौ नहिँ है, तिन्हहू दधि दूध खवावत हौ॥ बलहीनन को बलवंत करौ, बलि मूकन वेद पढ़ावत हौ। कहि रामगुलाम रमेस सुनौ, तब दीनदयाल कहावत हौ॥१५८॥

रूप भलो गुन सील भलो, अरु जाति भली भलि बुद्धि बड़ाई। बात भली घरबात

कन्द=चीनी का सार। मकरन्द=मधु। ग्राहक=मगर। करि=हाथी

भली वर, कीरति ते अतिही छबि छाई ॥ सोदर सूनु सखा सुखदायक, कीरति जात दिगंतहु गाई। रामगुलाम नहीं हरि सों हित, है दिन चारिहि वादि निकाई ॥१५८॥

कवित्त—अम्बक अरुन कंबु कंठ मनिमाल मंजु, बदन मयंक मोहै धनुष बिलोकिये। रमा को निवास उर बचन पियूष प्राप्य, गजगति हास रंभा मोहित तिलोकिये ॥ कोसलेस कामद कलपतरु कामधेनु, भारी भव व्याधि वेद वेगिही विसोखिये। चढ़ि कै गुलामराम मो मन तुरंग राम, बिषम वियोग विष कृपासिन्धु रोकिये।।१६०॥

ससि कैसो दरस परस सुरसरि कैसो, सुधा सम बानी सुखदानी मानि लीजिये। कामना को कामतरु चिंतामनि कामधेनु, नासिबे के मोहतम तरनि पतीजिये ॥ सदगुन खानि सत्यता को छीर सागर सो, प्रभुहू बसत तौ बखान कैसे कीजिये। बिनती गुलामराम कीन्ही है कृपाल राम, ऐसे साधुसंग के कृपा कै सदा दीजिये।।१६१॥

काल कैसो श्रवन अकाल कैसो आयु को है, केतु के समान जाको दरसन गाइये। बासुकी सो बदन बचन बोलै बज्र सम, सनि के सरिस

दृष्टि देख दुख पाइये। पावक परस औ पषान सम बुद्धि जाकी, उदर निरै के सम नाना ताप ताइये। बिनती गुलामराम कीन्ही है कृपाल राम, ऐसो खल वामता को नाम न सुनाइये॥१६२॥

जिन्हैं देखि दिग्गज ह्वै लज्जित दिगंत भये, भ्रमत से भीत व्योम वृन्द पाथनाथ के। नीलाचल अचल चलत ये अनेक एक, उक्ति व्यतिरेक कवि बड़े बड़े माथ के॥ झूमत झुकत मद चुवत कपोलन्ह तें, सावन सदा ही भूमि भींजी पुन्यपाथ के। बदत गुलामराम भद्र मृग भद्र नाम, सुंडादंड मुदित बितुंड रघुनाथ के॥१६३॥

वरन वरन के बिराजै वर वाजिराज, सबल सुल-च्छन सँवारे अंग अंग के। चपल चलाक बायु बेग को बिमन्द करैं, तरैं सरि सिंधु नैन मुरै परे जग के॥ मदन महीप मन मीत उच्चैश्रवा सा-थी, हाथिन उछंगै लंघै मेरु गिरि सृंग के। बदत गुलामराम अवनि अनंत राम, बूझि वैनतेय पंख कीन्हे ये तुरंग के॥१६४॥

सवैया—जेहि सीस धरी सिय के पद की

---

[१] निरै=नरक। पाथनाथ=वरुण व्यतिरेक=विना। बितुंड= सुन्दर मुख, झुंड। उच्चैश्रवा=सूर्य का घोडा। वैनतेय गरुड़।

रज, ताहि कहा जग पावनता। जेहि जानकी नाम जप्यो मुख हू, तेहि ते बड़ को वकता स-कता। जेहि राम प्रिया जस कान सुन्यौ, तेहि को मन क्यौं नहिँ राम रता। जेहि रामगुलाम सिया गति है, तेहि को कलिकाल कहा करता ॥१९५॥

जानकी के पद पंकज पावन, पेखत लेखन भाग बड़ो हौं। जानकी नाम कहे सुख पावत, जानत मंत्र न जंत्र जड़ो हौं॥ जानकी द्वार को जाचक जाहिर, औरहि जाचत जात गड़ो हौं। रामगुलाम बनाइ कहे कछु, क्यों सिय सन्मुख होत खड़ो हौं ॥१९६॥

जीव चराचर भूमि जहाँ लगि, पेषति पोषति जानकी मैया। जानति है सब के घट की गति, कामलता सुरधेनु सुगैया॥ हौं अपने मन को समुझावत, बात यहै निसिवासर भैया। जाहि जहाँ परतीति तहाँ सुख, रामगुलाम के राघव पैया ॥१९७॥

कवित्त—जानकी के नाम पर वारें कोटि कामतरु, कोटि कामधेनु जानकी के सम है

जडो = जड,मूर्ख। पैया = पहिया' घुमानेवाला।

नहीं। ऊसर अरन्य ग्राम गुह्यक पुरी पवित्र, जानकी चरन रेनु ध्यान दिन रैनहीं ॥ अर्थ धर्म काम मोच्छ जानकी कृपा तें होत. जानकी सुजस गाइ पायो सुख को नहीं। जानकी प्रसाद दोष दारिद दवारि कन्द, भाषत गुलामराम वेद वादि है नहीं ॥१६८॥

सवैया—जा गति को चतुरानन चाहत, जाप जपै बिधि वेद जपी है। संभु समाधि सवाँरत जा लगि, जारत देहहिँ घोरतपी है॥ साधक सिद्ध सिहात सबै मुनि, रामगुलाम न बात छपी है। सो गति गंग तरंग बिलोकत, पातक पुंज प्रहार अपीहै ॥१६९॥

या बिनती मम देव तरंगिनि, हो तुम सर्व मनोरथ दाइनि। चाहत अर्थ न धर्म न कामहिँ, मोच्छहु पातक पोतक डाइनि ॥ रामगुलाम भजो छल छाड़ि कै. ठाकुर राम सिया ठकुराइनि। तेरेहि तीर सरीर रहै यहु, जैसेहु कैसेहुं गंग गुसाँइनि ॥१७०॥

रूपघनाक्षरी—बिष्णु बिधि बामदेव ब्यास बालमीकि वेद, बालखिल्य बीन पानि

गुह्यकपुरी = यक्षपुरी, कुवेर की नगरी। वादि = मिथ्या। अपी = निश्चय। देवतरंगिनि = गङ्गा। पोतक = बालक, बच्चा

पाय नव निसिपति। बासव बरुन बायु बसुद बिहंगराज, बातजात बारन बिभीषन बिमल मति॥ बानी औ बिनायक बिभावसु-विभाकरादि, बिप्र वृंद बिबुध बिमत्सर गोबिन्द गति। बंदत बदत बार बार बशि बार बार, माँगत गुलाम राम रामपदकंजरति॥१७१॥

कवित्त—चन्द्रचूड़ चितक चकोर चितचारु चंद, चंडीपति चंडकर चखहू सरोज के। महादेव मानद मुकुन्दमित्र महिमौघ, मय मद हारी मान मथन मनोज के॥ भोरानाथ भीम भय भंजन भगत भर, भगवान भावजाही भूखे भंगभोज के। सूलधर व्यालधर कंठ कालकूटधर, धराधर गंगाधर दाता महा मौज के॥१७२॥

सवैया—सिंधु तरे तम की जननी हनि, कौस प्रबोध करयो सुरसाको। सीय ससोक असोक तरे लखि, दै मुँदरी कृत धीरज ता को॥ रावन बाग बिनासि दले खल, लंकजराय करी सब खाको। रामगुलाम सुनौ बिनती किन, मेरिहि बार पराक्रम थाको॥१७३॥

विभावसु=अग्नि। विभाकर=सूर्य्य। चन्द्रचूड़=चन्द्रमौलि। चंडीपति=शिव। चंडकर=सूर्य्य। तम की जननि=राहु की माता।

कवित्त—चोर विष व्याधिहू तैं, दावानल आगिहू तैं, भूत प्रेत की जमाति जवै जहाँ माँखिहैं। अगम अरन्य हू तैं सैल सरिवन्यहू तैं वाघसिंह व्रात घात दीनतन भाखिहैं॥ अहि रिपु मारिहू तैं घोर ग्रह धारिहू तैं, विषम बयारिहू तैं संत श्रुति साखिहैं। जम के जमूसन तैं तीव्र ससि पूषन तैं, अपने गुलाम को रमैया राम राखिहैं॥१७४॥

मुसुकानि बोलनि विलोकनि चलन चाहि, सुधा पिक झख गज मन में न आवहीं। वदन विलोचन चरन कर वर पेषि, कंज इन्दु मीन मृग समता न पावहीं॥ नासिका सुकंठ ओठ दसन निहारि करि, करी औ कपोत विंव दाड़िम न भावहीं। बदत गुलामराम नख सिख नीक राम, उपमा कहे तैं कवि कुकवि कहावहीं॥१७५॥

सवैया—वार करो नहिं वारनको, झखराज विदारि कियो दुख वारन। मूढ़ पिता दुखयो प्रहलादहिं, भो नरसिंह सुरारि सँघारन॥ द्रौपदी की पति लेत दुशासन अंवर रूप धरयौ तेहि

वन्य=वन। व्रात=झुण्ड। घात=आक्रमण, चोट।
पूषन=सूर्य्य। वार=देरी। वारन=हाथी। झखराज=मगर।

कारन । रामगुलाम कृपाल रमेसहि, क्यों न भजै जन दीन सँभारन ॥१७६॥

कवित्त—नाम महिमा की बात और कोउ कहै कहा, दंपति जपत संभु ऐसी करै रति को। सुक सनकादि सेष नारद न पावैं पार, गनप विरं-चिहू तें दूसरो सुमति को ॥ जवन अजामिल ते पतित सुने न बेद, तिन्हहू को सुनिय देवैया सद्गति को। त्यागि और आस बिसवास करि आठो जाम, सुमिरु गुलामराम नाम सीता-पति को ॥१७७॥

नैन लगै रावरे स्वरूप सीस नवै तुम्हैं, रसना निरंतर चरित चारु गावों मैं । पग परिकरमा करम करैं कर नाथ, जूठन प्रसाद भाल नासिका लगावों मैं ॥ काल कर्म के अधीन चहौं जौन जोनि लहौं, मानौ मृग पच्छी पसु आप को कहावों मैं। बिनती गुलामराम करत कृपाल राम, सुनिय दै कान वरदान यह पावों मैं ॥१७८॥

कर्म परिपाक वपु कहैं वेद साँच सो तौ, पूरब वयो है वीज सोइ अब लहिये। अजहूँ करत जो जो ह्वैहै भोगवे को सो सो, हरष विषाद

परिपाक = फल। मानौ = मानव, मनुष्य।

चहौ कौन हेतु गहिये ॥ ऐसी जानि परै जैसी सहिये सरीर तैसी, हानि अरु लाभ मध्य एकै रस रहिये । धीरज गुलामराम त्यागिये न मेरे मन, सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ॥१७८॥

मोह मृगवारि का स्वरूप विस्व कहैं सन्त, मन सो कुरंगनी को भूलि भरमत है। मातु पितु तीय तनै बंधु औ सनेही सखा, जेतो परिवार सब स्वारथ में रत है ॥ वदत गुलाम-राम सुख को न लेसकहूँ, परम कलेस मूढ़ सदा सरसत है। अजहूँ भलो है भलो आज़ुलों छलो सो छलो, हिय के उघारि नैन देखु तैं नसत है ॥१८०॥

सवैया——कर्मप्रवाह बह्यौ परिसन्तत, जो-निन्ह जन्म अनेक धरयो है। बारहिबार परयो जम को दुख, सोऊ भली विधि मूढ़ भरयो है ॥ ईस दियो नर को तन पावन, वै तोहि ऊपर छोह करयो है। रामगुलाम अगाध इहाँ लगि, ता दिसि तैं नहिं नेकु ढरयो है ॥१८१॥

कवित्त——जाको जस गावत पुरान वेद नेति नेति, पावत न पार को भनै सहस्रसीस सो । जाके पद वंदत मुनीन्द्र औ विरंचि सक्र

सरसत=अधिकाता है । नसत=नष्ट हाता है ।
[illegible]=शेष ।

जाको ध्यान धरै सिद्ध ध्यावैं जाहि ईस सो।
जाके सनमुख होत अधम अनेक तरे, राज पर-
भागी भयो दूबरो कपीस सो। साहिब समर्थ सब
लायक गुलामराम, सेइये सनेह सों सुजान जान-
कीस सो ॥१८२॥

लच्छ चौरासी जोनि जन्म धरि तिहूँ लोक,
कर्म के प्रवाह परि भ्रमि सब आयोरे। सत्रु मित्र
स्वामी सुत सेवक जनक जाया, मात
भ्रात भली बिधि विपुल बनायोरे॥ रूप
रस गंध औ परस रस मध्य मन, श्रुति त्वच
नैन जिह्वा नासिका लगायो रे। वदत गुलाम-
राम राम की सपथ तोहि, राम ते विमुख कहु
कहूँ सुख पायो रे ॥१८३॥

अगम अपार सनसार घोरसिंधु सम, महा-
मोह वारि कै प्रपूर वह सोत रे। तरषा तरंग
चलै विभ्रम गँभीर भौंर, अर्थ जल जंतु ते रह्यो
है ओतप्रोत रे॥ लोभ ग्राह प्रबल प्रचंड क्रोध
बड़वाग्नि, पन्नग मनोज विषै विष को न ओत
रे। परिकै गुलामराम काहे दुख सहे मूढ़, राम-
पाद पोत चढ़ि पार क्यों न होत रे ॥१८४॥

जाया=स्त्री। ओतप्रोत=गुथा हुआ। ओत=आलस्य।
पोत=जहाज।

सवैया—सो जन साधु सुसील समी सुचि, सो कुल-भूषन सो गुनधाम है। सूर सपूत सोई सब लायक, सो पुनि सुन्दर कोटिक काम है॥ भाग सराहत हैं तेहि के सुर, कोउ नहीं तेहि के जग वाम है। रामगुलाम कृतारथ सो नर, जासु हितू सिय को पति राम है॥१८५॥

कवित्त—पाइ सुर दुर्लभ मनुज देह कर्म-भूमि, ईसप्रीति हेतु जौपै कर्म न कछू करी। पर उपकार श्रुतिसार सनसार मध्य, आपने चलत सोउ नाहिँ जौँ हिये धरी॥ सोवत कमात खात उमिरि बिताई वृथा, सेये न सुसील साधु मान कै महीसुरी। कहत गुलामराम कौन फल पायो तन, तिन्ह तें भले हैं खर फेरु स्वान सूकरी॥२८६॥

विप्र से न वर्ण संभु सारिखो न भक्तराज, ज्ञान ब्रह्मज्ञान तें न वेद और साम सो। अस्त्र ब्रह्मअस्त्र ते न वृक्ष कल्पपादप सो, पच्छी वैनतेय सोँ न रूपमान काम सो॥ धेनु कामधेनु सी सरित सरजू सी नाहिँ, वात पच्छराखि न कही गुलामराम सो। राम सो न देव रामनाम

महीसुरी=ब्राह्मण। खर=गदहा। फेरु=सियार।

सो न मंत्र कहीं, सीय सी न सक्ति औ न धाम औधधाम सो ॥१८७॥

लच्छ चौरासी जोनि मध्य नर देह धन्य, ताहू तें अधिक द्विज जन्म कहि गाइये। द्विज तें अधिक विप्र विप्र तें अधिक बुध, बुध तें अधिक कर्मकार ठहराइये ॥ कर्मकरता तें ब्रह्मविद को कह्यौ है बड़ो, ब्रह्मविद सोई ईसभक्ति जहँ पाइये। कहत गुलामराम बात परिनाम एही, तजि सब काम रामरूप लय लाइये ॥१८८॥

देस बिनु भूप जैसे भूप बिनु नीति जैसे, नीर बिनु नीरद ज्यों द्यौस बिनु भानु है। समा बिनु सभा जैसे व्यंजन लवण हीन, रूप बिनु तेज जैसे तेज बिनु मान है॥ रैन बिनु चन्द जैसे चंद बिनु रैन जैसे, सर बिनु कंज जैसे देह बिनु प्रान है। जोग बिनु छेम जैसे भाव बिनु नेम जैसे, तैसही गुलामराम भक्ति बिनु ज्ञान है ॥१८९॥

वाहुमूल ग्रीवा कटि मनिबंध जान्हु दोऊ, संधि प्रति प्रविसि सरीर अनुसरिहै। रोग रिपु असुर

कर्मकार=कर्म करनेवाला। समा=समाज, जन समूह।

कपीस हनुमान विष्नु, तोहि विनु भूसुर को को सहाइ करिहै॥ यातें सुनि विनती विलोकिये कृपा की दीठि, ढील किये महावीर कैसेहू न सरिहै। कहत गुलामराम सेन दुख आवो काम, विना वातजात वातव्यथा कौन हरिहै ॥१८०॥

कीरति तिहारी उजियारी अति रामचन्द्र, सेष ससि सारद विलोकि कै लजात हैं। संभु कहैं सुभ्रता की रासि भासै तिहूँ पुर, हिमवान देवधुनी तारका सिहात हैं॥ चारि षट्‌ अष्ट दस नारदादि देवरिषि, पावत न अंत को गनत जुग जात हैं। वदत गुलामराम ताहि क्यों बखानै कोऊ, सीपी मों समावै सिंधु काके मुख दाँत हैं ॥१८१॥

सवैया— दीनदयाल दयानिधि राँघव, दानी दुनी नहिँ दूसर दीसै। दारिद दाव बुझा-वन सावन को वर वारिद वारि बरीसै। दूवर दीन मलीन विभीषन भूप कियो वधिकै दससीसै। रामगुलामहि राखिहि सोइ लियो जेहि राखि कपूत कपीसै ॥१८२॥

देवधुनी=गंगा। तारका=तारा। दाव=ज्वाला।

या जगजीवन है दिनचारिक, काल कराल गहे कर चोटी। छाड़त राउ न रंकहि कैसेहु, देखत है न बड़ी वय छोटी॥ मान गुमान करौं मन में नहिं, काहुहि बोलहु बात न मोटी। रामगुलाम भजौ सियरामहिँ, मैं अरु मोर तजौ मति खोटी॥१८३॥

राम सुस्वामि सखा पुनि रामहिँ, राम पिता अरु रामहिँ भाई। रामहिँ देव गुरू मम रामहिँ राम हितू वर रामहिँ भाई॥ राम को सौंह भरोस है राम को, रामहिँ सो कहिहौं दिनताई। रामगुलाम सहायक रामहिँ, रामहिँ सों सब भाँति सगाई॥१८४॥

पोषित भौंह कमान बनी, वरनै न सिलीमुख है अनियारे। काम धनुर्द्धर लै कर छाँड़त, जोगिन्ह के मृग मानस मारे॥ देव अदेवहु को न चलै बल, कौन गनै जगजीव बिचारे। रामगुलाम बचै तबहीं जन, श्रीरघुबीर जबै रखवारे॥१८५॥

जो विधि रूप रचै जग जाहिर, पालत श्रीपति रूप चराचर। रुद्र सरूप सँघार करै पुनि,

---

अनियारे=चोख।

एक स्वतंत्र सदा सब तें पर ॥ गावत वेदहु पार न पावत, ध्यावत सिद्ध मुनीस धराधर । रामगुलाम सोई मम ऊपर, राम करौ करुना करुनाकर ॥१८६॥

कवित्त—दासरथी दीनबंधु दूषन दुवन देव, दारिद विदारन उदार दयाकर हौ । वर्मधारी चर्मधारी खड्ग सर चापधारी, कुंडल मुकुटधारी पीत पट धर हौ ॥ तिलक ललाटधारी ग्रीव उपहारधारी, अंगद कटकधारी काम गर्व हर हौ । वदत गुलामराम दोष दुख मोचन हौ, लोचन चकोर मेरे राम छपाकर हौ ॥१८७॥

वैकुंठ वामन विरज विस्वनाथ विभो, वानीपति वनमाली विरद विसाल हौ । माधव मुकुन्द मधुमर्द्दन महेसमित्र, मायापर मुनि मन मानस मराल हौ॥ अगह अगोचर अनादि अविनासी एक, अगुन अनूप रूप दीन के दयाल हौ। वदत गुलामराम धेनुपाल विप्रपाल, देव नर नागपाल अवध भुआल हौ ॥१८८॥

सवैया—ज्यौं धन को धनवान करै मद,

दुवन=दुर्जन। अंगद=विजायठ । कटक=कंकण। छपाकर=चन्द्रमा ।

श्रौ कुल को अभिमान कुलीनै। भारतिगर्व अखर्व विदग्धहि, सुन्दरता बल नारि नवीनै॥ मान गुमान गुनी मन राखत, चातुरता चित चाउ प्रवीनै। राम गुलामहिं त्यों निसिवासर, राम कृपा करि दीन अदीनै॥१९९॥

कवित्त—जहां तहां कलि की कुचालि कूर भूरि भरे, बूझै कौन काहि हौं विलोकि भयो बावरो। प्रीति रीति जानपनी दया परतीति हनी, कलई कुटिलताई घनी घर तावरो॥ मान मद दंभ द्वेष कपट कलंक कोटि, मोह के बकोटे में न सूझै स्वेत सांवरो। बदत गुलामराम कहां जाऊँ कृपाधाम, सब अंग हीन को भरोसो राम रावरो॥२००॥

नीति हीन भूपति प्रतीत हीन मीत कलि, नेह हीन नारि नहीं रीति व्यवहार की। बीज हीन भूमि औ विराग हीन जती बटु, सोचै साधु देखि देखि गति सनसार की॥ जाचक न पावै भीख सिख्य हू न मानै सीख, तृन को न लहै धेनु ठीक न करार की। बदत गुलामराम ऐसे

विदग्ध=अर्धशिक्षित। जानपनी=चतुराई। तावरो=डाह, जलन। बकोटे=निभ्रोटे, पंजामारने से। करार=कौल, वचन।

कुसमय में राम, विपति हरैया मोसे कइक हजार की ॥२०१॥

गंगा गिरा गंडकी गोदावरी पयोस्नी रेवा, गोमती कलिन्दकन्या तापी पापहारिनी । सरजू सतद्रु सिंधु सिरसी असंकी वेनी, कौसिकी वितस्ता औ कावेरी श्रेयकारिनी ॥ चन्द्रभागा चन्द्रप्रभा चम्बल दृषद्वती, सत्यवती रोधवती तुंगभद्रा तारिनी । सुमिरे गुलामराम मंदाकिनि पुन्य नाम, भगति मुकुति देनि आपदा विदा-रिनी ॥२०२॥

राम रमारमन रमेस राघौ रावनारि, राजिव नयन राजराज धनुधर हौ । दासरथी दयासिंधु दामोदर दीनबंधु, दारिद दवन दुनी दोष दुखहर हौ ॥ द्विरद उधारन वरद वर वन-माली, वाली हन घन तन मुनि मनहर हौ । सिला साप समन समन भव भंजकर, कैरव गुला-मराम केर सुधाकर हौ ॥२०३॥

बानी को विलास कोसलेस को सुजस गाउ, वृथा अर्थवाद के प्रवाह में न बहु रे। श्रवन सुधा

रेवा= नर्मदा नदी। सतद्रु=सतलज नदी। कौसिकी=कोसी नदी । दृषद्वती=घग्घरनदी । अर्थवाद=लेन देन का

के समय सुनु रघुनाथ गाथ, हाथन तें हृषीकेस सेवा सुख लहु रे। लोचन विलोकु सोचमोचन रमेस रूप, मन तें मनस्वी रामदास होइ रहु रे॥ वदत गुलामराम राखु हिये हरिनाम, काम क्रोध लोभ मोह आगि में न दहु रे ॥२०४॥

ग्राह तें उबारे गज गीधहू के पिंड पारे, विप्र व्याध तारे सोई विरद विचारिये। भूमिजा के प्यारे सप्तताल के दलनिहारे, पीत पटवारे बड़े नैन सों निहारिये॥ कौसिला के वारे घन कारे रावनारि राम, कीरति कृपाल की अकनि प्रान वारिये। वदत गुलामराम मोसो कौन दोसधाम, जैसो तैसो रावरो न आपहू विसारिये ॥२०५॥

दास हनुमान जाके लव कुस सूनु जाके, औध राजधानी सती सीय सम रानी है। कौसिला सी माता भ्राता भरत लखन लाल, लोने रिपुहन कीर्ति वेदन्ह बखानी है॥ बोधक वसिष्ठ कुलइष्ट रंग सखा सौरि, सचिव सुमंत्र आदि आपु महादानी है। वदत गुलामराम राजा मेरो राजाराम, लोकलोक साहिबी समर्थ धनुपानी है ॥२०६॥

सौरि=विष्णु।

॥ छप्पै ॥ वेद वादि विनु बोध बोधहू वादि कर्मगत । कर्म वादि विनु विरति विरति विन कोउ न त्यागरत । त्याग वादि विनु सांति सांति विनु को सुखपावै । बिनु सुख को थिर होत असांतहि भजन न भावै ॥ कहि रामगुलाम बिचार बुध, भजन विना छूटत न भय । नहिं अभय भये विनु रामपद, कमल अमल लागत न लय ॥२०७॥

तीरथ ब्रत जप जाग जोग सुभधर्म दयादिक । आगम निगम पुरान सास्त्र पूर न निरुपाधिक ॥ गौरि गनप रवि संभु रमापति सेवा नीकी । अन्न धरा धन ज्ञान दान साधन गति ही की ॥ बुध जो जेहि तेहि मारग मगन, हौं नहिं निन्दक काहुको । नित रामगुलाम खरारि पद-रज रति लोभी लाहु को ॥२०८॥

चन्द्रोपल लखि चन्द्र भानु लखि द्रवत भानु मनि । घन लखि नाचत मोर सुखी संतन मनिजुत फनि ॥ रुचत कुरंगहि राग चातकहि चाह स्वाति जल । मानस मुदित मराल क्षुधित जस पाइ असन भल ॥ जिमि नवलनागरी

निरुपाधि=उपद्रव हीन । असन=भोजन ।

नाह रति, मधुपहि जिमि भावत सुमन। तिमि रामगुलाम विदेहजा, वल्लभ पद करु प्रीति मन ॥२०९॥

राम प्रान के प्रान जीव के जीव वेद वद। सुखमा सीलनिधान ज्ञानघन मरजादा हद ॥ सुन्दर सुमुख सुजान सुसाहिब सेवक के हित। अविचल अमल अनन्त अखिल वल्लभ अमोघ नित ॥ जेहि नेतिनेति गावत सनक, सुक संकर ब्रह्मादि सुर। सोइ सीतापति धनु बान धर, निवसहु रामगुलाम उर ॥२१०॥

कुंडलिया। चन्दै चहै चकोर ज्यौं घन लखि नटत मयूर। मीन सनेही नीर के, कोक सोक हर सूर ॥ कोक सोक हर सूर केतकी भँवरहि भावै। दीपक सिखा पतंग चुंबकहि लोहो धावै ॥ राग न तजै कुरंग परै बरु बधिक के फंदै। त्यों ही रामगुलाम लगो मन रघुकुल चंदै ॥२११॥

जैसोतैसो रावरो, अब न त्यागिये मोहि। दयासिंधु दसरथ्थ के, वेद बखानत तोहि ॥ वेद बखानत तोहि अभय कौसिक को कीन्हो। सिला सुगति प्रद राम जनक कहँ सब सुख दीन्हो ॥

सूर=सूर्य।

प्रभुकृत सखानिषाद दीन गाँहक नहिँ ऐसो ।
रामगुलाम न सुन्यौ स्वामि सीतापति जैसो॥२१२॥
कीजै कृपा कृपाय तन, कौसलेस तजि रोस।
साधु सुमति अस कहत सब, सेवक सदा सदोस ॥
सेवक सदा सदोस सुधारै सब दिन स्वामी । हौं
अल्पज्ञ अनीस नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥ उड़गन
जलकन गने जाहिँ सुनि बानि पतीजै । मम अघ
अमित गुलामराम क्यों लेखो कीजै ॥२१३॥
साँचो कीजै बिरद निज, लीजै मोहि उबारि ।
अज्ञ अगम भवसिंधु मैं, बूड़त हौं त्रिसिरारि ।
बूड़त हौं त्रिसिरारि मोहजल वार न पारा ।
लोभ ग्राह कामादि कमठ अहि जंतु अपारा ॥
तृष्ना तरल तरंग बात बौड़र को बाँचो ।
प्रभुपद पोत गुलामराम भाषत बुध साँचो ॥२१४॥
पाई गीध हु सुगति भलि, सबरी भगति
सुहानि । भये भानुनंदन सखा, राम तिहारीबानि॥
राम तिहारी बानि विभीषन को अपनाये ॥
कपि कुल गायो वेद वीरबातज मन भाये ॥
अवध नगर नरनारि गारि दै लही बड़ाई ।
बिसर्‌यो रामगुलाम नाथ केहि कारन पाई ॥२१५॥

सुमति=मतिमान । बिरद=नामवर । पाई=सेवक ।

सवैया—श्रीरघुनाथ अनाथ के नाथ, सुने श्रुतिमाथ प्रमोद भयो है। पातक पंज प्रहारक नाम, लिये मुख के जमधाम गयो है ॥ कामद-वृक्ष कुजापति के जस, कान किये केहि का न दियो है। रामगुलाम विभीषन विप्र प्रमान प्रभंजन के तनयो है ॥२१६॥

जिय जानत जानकी जीवन के, नहिँ जानत आन जनेसन के। रघुनायक के गुन गावत हैं, नहि गावत और नरेसन के ॥ खर खंडन नाम पियूष पियें, न भियें भय भूरि कलेसन के। सुख सोवत रामगुलाम सदा, सुख सोचत क्यें अमरेसन के ॥२१७॥

बलिजाउँ सुबाहु विनासन की, बलिजाउँ सिला गति दायक की। बलिजाउं पिनाक विभंजन की, बलिजाउँ सदा सियनायक की ॥ बलिजाउँ विराध उधारन की, बलि-जाउँ धरे धनु सायक की। बलिजाउँ जयंत विमोचन की, बलि रामगुलाम सहायक की ॥२१८॥

जब गर्भ अवास निवास भयो, तब के तव मीतहु ते कहुरे। जठरानल ज्वाल उबारि

कुजापति=सीतानाथ। अवास=स्थान।

लियो, जो करी रखवारि मही महुं रे ॥ उपकार बिसारि विस्वंभर के, कृतनासक क्लेसन को सहु रे। सुख चाहसि रामगुलाम अजौं, भरता-ग्रज के पद को गहु रे ॥२१८॥

इति श्रीकवित्तरामायणे द्विवेदीरामगुलाम
कृत समाप्तः

तुलसी-ग्रन्थावली।

गोस्वामी तुलसीदासजी के ग्रन्थों के सम्बन्ध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। उसके महत्व को पढ़े अनपढ़े भारतवासी मात्र भली भांति जानते हैं। गोस्वामीजी के बनाये छोटे बड़े बारह ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। रामलला-नहछू, वैराग्य-सन्दीपिनी, बरवै, पार्वती-मंगल, जानकी-मंगल, रामाज्ञा-प्रश्नावली दोहावली, कवित्तरामायण, गीतावली, कृष्ण-गीतावली, रामचरित मानस और विनय-पत्रिका। इन बारहो ग्रन्थों को मूल मूल स्वच्छ चिकने कागज़ पर शुद्धता-पूर्वक मोटे अक्षरों में हम छपवा रहे हैं। पहली जिल्द ग्यारह ग्रन्थों की, दूसरी केवल रामचरितमानस की होगी। कठिन शब्दों का नीचे अर्थ भी दिया जाता है जिससे भावार्थ समझने में बड़ी सुगमता होगी। आशा है आगामी सितम्बर मास तक प्रथम जिल्द छपकर तैयार हो जायगी। दोनों वा एक ही जिल्द के जिनकी जैसी इच्छा हो वे ग्राहक हो सकते हैं। ग्रन्थ प्रकाशित होने के पहले जो महाशय एक रुपया पेशगी भेज कर ग्राहकों में नाम लिखाएँगे उन्हें पौन मूल्य में ही पुस्तकें दी जांयगी और जो पेशगी न भेज कर केवल ग्राहक श्रेणी में नाम लिखाएँगे उन्हें फ़ी रुपया दो आना कमीशन काट कर पुस्तकें मिलेंगी। तुलसी-ग्रन्थावली के प्रेमियों को यह सुअवसर हाथ से न जाने देना चाहिये। आज ही कार्ड लिख कर ग्राहकों में नाम लिखवाइये।

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहिला भाग ..	॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग ...	॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग ...	।=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग ...	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।=)
कबीर साहिब की अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१=)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	१।-)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहिला भाग ...	१॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग .	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण पहिला भाग	१॥)
गुरु नानक की प्राण संगली दूसरा भाग ...	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी" ...	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग २ "शब्द" ...	१)
सुन्दर बिलास . ..	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	॥)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त सवैया	॥)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ ...	॥)
जगजीवन साहिब की बानी, पहिला भाग ...	॥-)
जगजीवन साहिब की बानी, दूसरा भाग	॥-)
दूलन दास जी की बानी	।)॥

चरनदास जी की बानी, पहिला भाग	...	।।।-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	...	।।।)
गरीबदास जी की बानी	.. ...	१।-)
रैदास जी की बानी	... ...	॥)
दरिया साहिब (बिहार) का दरियासागर	...	।≡)॥
दरिया साहिब (बिहार) के चुने हुए पद और साखी		।-)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	...	।≡)
भीखा साहिब की शब्दावली	... ..	॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी	... ...	।।।=)
बाबा मलूकदासजी की बानी	... ...	।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	...	-)
यारी साहिब की रत्नावली	. ..	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	... ...	।)
केशवदास जी की अमीघूँट	... ...	-)॥
धरनीदास जी की बानी	... ...	।=)
मीरा बाई की शब्दावली	... ...	॥)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	... ...	।≡)॥
दयाबाई की बानी	... ...	।)
संतबानी-संग्रह, भाग १ [साखी]	... ...	१॥)

[प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]

संतबानी-संग्रह, भाग २ [शब्द]	... ...	१॥)

[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित, जो पहले भाग में नहीं हैं]

कुल२३।-)

अहिल्या बाई (सचित्र)	... ...	≡)

मिलने का पता

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद ।

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग की हिन्दी पुस्तकें

नवकुसुम—(प्रथम गुच्छ) इस पुस्तक में कई छोटी बड़ी कहानियाँ जो बडी रोचक और शिक्षाप्रद हैं संग्रहीत हैं। पढ़िये और घरेलू ज़िन्दगी का आनन्द लूटिये। मूल्य ॥।)

सचित्र विनय पत्रिका—गोस्वामीजी की इस दुर्लभ पुस्तक का दाम मय टीका के सिर्फ़ २॥) है सजिल्द ३)

करुणा देवी—औरतों को पढ़ाइये, बहुत ही रोचक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। मूल्य ॥≈)

हिन्दी कवितावली—यह उत्तम कविताओं का सग्रह बालक बालिकाओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य–)

हिन्दी महाभारत—हिन्दी मे सचित्र छप रहा है।

गीता—(पाकेट एडिशन) श्लोक और उनका सरल हिन्दी में अनुवाद है। गूढ़ शब्दों का कोश भी अंत में है। मूल्य ॥।=)

उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा—(सचित्र) इस उपन्यास के लिए यह कहना कि इसके लेखक पं० रामनरेश जी त्रिपाठी हैं काफ़ी है देखिये कैसी अच्छी सैर है। मूल्य ॥)

सिद्धि—यथा नाम तथा गुणः। पढ़िये और अपने जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥)

महारानी शशिप्रभा देवी—क्या ही विचित्र उपन्यास है पढ़कर देखिये, जी प्रसन्न हो जाता है। मूल्य १।)

सचित्र द्रौपदी—पुस्तक मे देवी द्रौपदी के जीवन चरित्र का अति उत्तम चित्र खींचा गया है। पुस्तक प्रत्येक भारतीय के लिये उपयोगी है। मूल्य ॥।)

कर्मफल—नया छपा है और क्याही उत्तम उपन्यास है। मूल्य ॥।)

दुःख का मीठा फल—नाम ही से समझ लीजिये। मूल्य ।।।=)

साहित्यालोचना— पं० चन्द्रशेखर शास्त्री की लिखी है। लेखक के नाम ही से इसकी उपयोगिता प्रकट हो रही है। मूल्य ।।)

सचित्र रामचरितमानस—श्री गोस्वामीजी की असली रामायण। इसको हमने बड़े रूप में टीका सहित प्रकाशित किया है। भाषा बड़ी सरल और लालित्य पूर्ण है। यह रामायण सुंदर चित्रों मानस-पिंगल और गोसाईं जी की जीवनी सहित है पृष्ठ संख्या १४१८ मूल्य लागत मात्र केवल ८)

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ।।)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य सादे का ।।।=) और सजिल्द १)

विनय कोश—विनय-पत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। सजिल्द मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने योग्य, मोटे अक्षरों में बहुत ही शुद्ध छपा है मूल्य -)॥

तुलसी ग्रन्थावली—तुलसीदास जी के बारहो ग्रन्थ शुद्धता-पूर्वक मोटे अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। शीघ्र ग्राहकों में नाम लिखाइये।

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम द्विवेदी कृत छपी है। पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ हैं—

मिलने का पता—

मैनेजर बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।